गरज्ञान

१—१५

[illegible]-जैन-[illegible] चौबीसी

प्रकाशक,—

रिसागर जैन पुस्तकालय

लोहावट, मारवाड.

सूचना.

इस पुस्तकमें अशुद्धियें हैं उनका शुद्धिपत्रक अन्तमे रक्खाहै अतः पाठकगण सुधारकर पढे.

श्री जैन एडवोकेट प्री० प्रेसमां वाडीलाल बापुलाल शाहे छापी.

प्रत १०००, प्रथमावृत्तिः सन्ने १९२८
वीर सं० २४५४ विक्रम १९८५
अमूल्य ।



॥ ॐ अर्हं नमः ॥

श्री सुखसागरज्ञानबिन्दु नं. १२,१३

श्रीआनन्दघन–देवचन्द्र

चौवीसी

खरतरगच्छाधीश्वरश्रीमत्सुखसागरजी
म० के वर्त्तमान पट्टधर श्रीमद्हरि-
सागरजी म० के आज्ञानुयायिनी
श्रीमती सिंहश्रीजी म० के शि-
ष्या प्रतापश्रीजी म० की
शिष्या चैतन्यश्रीजी म०
के सदुपदेशसे

—: द्रव्यसहायक :—

शेठ. रूपचन्दजी रीखबदासजी
गोलछा.



ॐ

॥ श्रीमदानन्दघनजी स्तुति

सर्वदर्शनविख्यातो,
विश्ववन्द्यो मुनीश्वरः ।
ज्ञानीध्यानी प्रभोर्भक्तो,
विरागाणां शिरोमणिः ॥१॥

शुद्धधर्मोपदेष्टा च,
जैनशासनद्योतकः ।
ध्यानिनामग्रणी मान्यो,
भावचारित्र्य साधकः ॥२॥

अध्यात्मोद्धारकः पूज्यः,
समतानन्दभाक् च यः ।
आनन्दघनयोगी स,
जीयाद्भारतमण्डले ॥ ३ ॥

ले० बुद्धिसागर सूरिः

किञ्चिद्वक्तव्य

मान्यवरपाठक ?

आज आपके सम्मुख "श्रीआनन्दघन देवचन्द्र चौवीसी" नामकी लघु पुस्तिका उपस्थित करते है, जो आकारमें छोटी है, परन्तु गुणों में गरीष्ठ है,

यह पुस्तिका क्याहै मानो उन आर्ष पुरुषोंके पवित्र हृद्यका आदर्शहै, इसके पढनेसे पूर्व-कालके महात्माओंके हृदयगत भाव आप सहजही में अच्छीतरह जान सकेंगे कि वे कैसे अनुपम उच्च सम्यग् ज्ञानदर्शन चारित्रादि

गुणोंमें रमण करते थे.

गङ्गा सिन्धु नदीके समान पवित्र विचित्र रसमय देवाधिदेव सर्वज्ञ, श्री वीतरागदेवके अगम, अगोचर, अमर, अक्षय, अविनाशी, अरूपी अव्यापी, अनिन्द्रिय अलख, अबन्धक, अयोगी अरोगी अवेदी, अकर्म्मी, अलेशी, अनाहारी, अनास्ति अनुदयी अविपाकी, अयोनि असंसारी, अव्याबाध, सच्चिदानन्दादि, अनन्त गुण वर्णन पूर्ण स्वामिसेवकभाव कार्य-कारणभाव, ध्यान-ध्येय-ध्यातृ-भावोंसे भरी हुई यह अप्रतिम

पुस्तिका है.

इसके सम्पादक परम मान्य-
वर स्याद्वादशैलीके कट्टर उपासक,
जैनागमज्ञाता, जैन धर्मके धुरन्ध-
रनेता—आजीवन द्रव्याणुयोगके
अभ्याससे अध्यात्ममेंलीन, परम-
अव्याबाध समाधिसुधारसास्वादी
अध्यात्ममस्त महात्मा. योगिप्रवर
श्रीमदानन्दघनजी श्रुतसागर म-
न्थनकारक श्रीमद्देवचन्द्रजी म-
हाराज हैं

इनदोनों पूज्योंकी विद्यमा
नता अढारवींसदीके पूर्व और
उत्तरकालमेंथी ऐसा इतिहासके

खोजनेसे निश्चित होताहै

इस वीसमी सदीमें इनदोनों योगियोंकीशरीररूपसे अविद्यमानताहोतेहुए भी उनके हृदय द्रहसे निकले सुसम्बद्ध (अक्षर) शब्दप्रवाह विजयवन्त वर्ततेहैं उन्ही शब्द श्रोतोंमें निरन्तर रमणकरनेवाले योगनिष्ठ अध्यात्मज्ञानी श्रीमद्बुद्धिसागरसूरीश्वरजीने उन अगम्य अक्षरोत्पादकों के प्रति असाधारण भक्तिकोधारणकरते हुए गीर्वाणगिरामें अत्यन्त भावपूर्ण उन महात्माओंकी स्तुति कीहै उसेपाठकगण अन्यत्र इसपुस्तकमेंही पढकर अनुमानकरस

क्योंकि उपरोक्त महात्मा श्रीमदा-
नन्दघनजी श्रीमद्देवचन्द्रजी कैसे
ज्ञानीथे.

इस पुस्तिकामें रही हुई स्तवन
चौवीसीए कइ महाशयोने अल-
ग२छपाकर पुस्तिका रूपमें प्रकट
कीहै परन्तु दोनो चौवीसीका एक
साथलाभ उठानेवाले पाठकोंकी
सुगमताहेतुसे " लोहावट श्री
हरिसागर जैन पुस्तकालय " की
और से श्रीसुखसागर ज्ञान
बिन्दु नं १२-१३ रूपमें बीकानेर
निवासी श्रीमान् शेठ रूपचन्द्रजी
ऋषभदासजी गोलछाके द्रव्यसहा-

यसे एकसाथ छपाकर प्रसिद्धकी जातीहै अपने द्रव्यका सद्व्ययक-रनेंसे शेठजी धन्यवादके पात्रहैं ?

इस पुस्तिकाकों पाठक निरन्तर अभ्यासकर प्रभुभक्तिमेंलीनहोवें और अपनी आत्माको प्रकाशमय पवित्रनिर्मलबनावें यही प्रकाश-ककी हृदयाकांक्षाहै इसमें छद्मस्था-वस्थाके हेतुसे संशोधन मुद्रणादि करते समय अशुद्धिएं रहगइहोतो पुस्तिकाको बिद्वान् सज्जन पाठक शुद्धकर पढें-

इत्यलं विस्तरेण

श्री हरिसागर जैन पुस्तकालयके
कार्य—कर्ता
इन्द्रचन्द्र पारख— लोहावट.

श्रीवीतरागाय नमोनमोऽस्तु ।



आनन्दघन चौवीसी

श्रीऋषभजिन स्तवन ॥

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे,
ओर न चाहुं रे कंत ॥
रीझ्यो साहेब संग न परिहरे रे,
भांगे सादिअनंत ॥ ऋषभ ॥ १ ॥

प्रीतसगाईरे जगमां सहु करे रे,
प्रीतसगाई न कोय ॥
प्रीतसगाईरे निरुपाधिक कही रे,
सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषभ ॥२॥
कोइ कंतकारण काष्ठ भक्षण करेरे,
मिलसुं कंतने धाय ॥
ए मेलो नवि कहिये संभवे रे,
मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋषभ ॥३॥
कोइ पतिरंजन अतिघणो तप करे रे,
पतिरंजन तन ताप ॥
ए पतिरंजन मैं नवि चित्त धर्युं रे,
रंजन धातु मिलाप ॥ ऋषभ ॥४॥
कोइ कहे लीलारे अलख अलख·
तणी रे, लख पूरे मन आस ॥

दोषरहितने लीला नवि घटे रे,
लीला दोषविलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥
चित्तपसन्नेरे पूजनफल कह्युं रे,
पूजा अखंडित एह ॥
कपटरहित थइ आतम अरपणा रे,
आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥

श्रीअजितजिन स्तवन ॥

पंथडो निहालूंरे बीजा जिनतणो रे,
अजित अजितगुणधाम ॥
जे तें जीत्यारे तेणे हुं जीतिओ रे,
पुरुष किस्युं मुज नाम ॥ पंथ० ॥१॥
चर्मनयण करी मारग जोवतां रे,
भूल्यो सयल संसार ॥

ऊँणेनयणे करी मारग जोइये रे,
नयण ते दीव्य विचार । पंथ० ॥२॥
पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे,
अंधोअंध पलाय ॥
वस्तु विचारेरे जो आगमेंकरी रे,
चरण धरण नहीं ठाय ॥ पंथ ॥३॥
तर्कविचारे रे वाद परंपरा रे,
पार न पहुंचे कोय ॥
अभिमते वस्तु रे वस्तुगते कहे रे,
ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥
वस्तुविचारे रे दीव्य नयणातणो रे,
विरह पड्यो निरधार ॥
तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,
वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥५॥

काललब्धि लही पंथ निहालशुं रे,
ए आशा अवलंब ॥
ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे,
आनन्दघन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥

श्रीसंभवजिन स्तवन ॥

संभवदेव ते धुर सेवो सवे रे,
लहि प्रभुसेवन भेद ॥
सेवनकारण पहेली भूमिका रे,
अभय अद्वेष अखेद ॥ संभ० ॥ १ ॥
भय चंचलताहो जे परिणामनी रे,
द्वेष अरोचक भाव ॥
खेद प्रवृत्तिहो करतां थाकीये रे,
दोष अबोध लखाव ॥ सं० ॥ २

चरमावर्त्तहो चरमकरण तथा रे,
भवपरिणति परिपाक ॥
दोष टले वली दृष्टि खुले भली रे,
प्राप्ति प्रवचनवाक ॥ सं० ॥ ३ ॥
परिचय पातक घातक साधुशुं रे,
अकुशल अपचय चेत ॥
ग्रंथअध्यातम श्रवण मनन करी रे,
परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥
कारणजोगेहो कारज नीपजे रे,
एमां कोइ न वाद ॥
पण कारणविण कारज साधिये रे,
ए निजमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥
मुग्ध सुगमकरी सेवन आदरे रे,
सेवन अगम अनूप ॥

देजो कदाचित् सेवकयाचना रे,
आनंदघन रसरूप   सं० ॥ ६ ॥

श्रीअभिनंदनजिन स्तवन ॥

अभिनंदन जिन दरशण तरसिये,
दरशण दुर्लभ देव ॥
मतमत भेदे रे जो जइ पूछीये,
सहु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥
सामान्येकरी दरशण दोहिलूं,
निरणय सकल विशेष ॥
मदमें घेर्यो रे अंधो किम करे,
रविशशि रूपविलेख ॥ अ० ॥ २ ॥
हेतु विवादेहो चित्तधरि जोइये,
अतिदुरगम नयवाद ॥

आगमवादेहो गुरुगम को नहीं,
ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥
घाती डुंगर आडा अतिघणा,
तुज दरशण जगनाथ ॥
धीठाइंकरी मारग संचरूं,
सेंगू कोइ न साथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥
दरशण दरशण रटतो जो फिरूं,
तो रणरोझ (ज) समान ॥
जेहने पिपासा हो अमृतपाननी,
किम भांजे विषपान ॥ अभि० ।५।
तरस न आवेहो मरणजीवनतणो,
सीजे जो दरशण काज ॥
दरशण दुर्लभ सुलभ कृपाथकी,
आनंदघन महाराज ॥ अभि० ॥६॥

श्रीसुमतिजिन स्तवन ॥

सुमति चरणकज आतम अरपणा,
दरपणजिम अविकार । सुग्यानी ॥
मतितरपण बहु सम्मत जाणिये,
परिसरपण सुविचार। सुग्यानी
सु० । १ ।
त्रिविध सकल तनुधर गत आतमा,
बहिरातम धुरिभेद । सुग्यानी ।
बीजो अंतरआतम तीसरो,
परमातम अविच्छेद सुग्यानी सु० २
आतमबुद्धेहो कायादिक ग्रह्यो,
बहिरातम अघरूप । सुग्यानी ।
कायादिकनोहो साखीधर रह्यो,
अंतरआतम रूप । सुग्यानी सु० ३

ज्ञानानंदेहो पूरण पावनो,
वरजित सकल उपाधि । सुग्यानी
अतिंद्रिय गुणगणमणि आगरू,
इम परमातम साध सुग्यानि सु० ४

बहिरातम तजी अंतरआतमा,
रूप थई थिरभाव । सुग्यानी ।
परमातमनुंहो आतमभाववुं,
आतम अरपण दाव । सुग्यानी सु५

आतमअरपण वस्तु विचारतां,
भरम टले मतिदोष । सुग्यानी ।
परमपदारथ संपत्ति संपजे,
आनंदघन रस पोष । सुग्यानी सु६

श्रीपद्मप्रभजिन स्तवन ॥

पद्मप्रभजिन तुज मुज आंतरुं रे,
किम भांजे भगवंत ॥
करमविपाके कारण जोइने रे,
कोइ कहे मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥
पयई ठिई अणुभाग प्रदेशथी रे
मूल उत्तर बहु भेद ॥
घाती अघाती बंधुदय उदिरणा रे,
सत्ता करमविच्छेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥
कनकोपलवत् पयडि पुरुषतणीरे,
जोडी अनादिस्वभाव ।
अन्यसंजोगी जिहांलगे आतमारे,
संसारी कहेवाय । पद्म० ॥ ३ ॥

कारणजोगेह्रो बांधे बंधने रे,
कारण मुगति मुकाय ॥
आश्रव संवर नाम अनुक्रमे रे,
हेयोपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥

गूंजनकरणे अंतर तुज पड्यो रे,
गुणकरणे करी भंग ॥
ग्रंथउक्तकरी पंडितजन कह्यो रे,
अंतरभंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥

तुजमुजअंतर अंतर भांजसे रे,
वाजसे मंगल तूर ॥
जीवसरोवर अतिशय वाधसे रे,
आनंदघन रस पूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

श्रीसुपार्श्वजिन स्तवन ॥

श्रीसुपासजिन वंदिये,
सुखसंपत्तिने हेतु । ललना ॥
शांतसुधारस जलनिधि,
भवसागरमां सेतू । ललना ।
श्रीसुपा० ॥ १ ॥

सात महाभय टालतो
सप्तम जिनवरदेव । ललना ॥
सावधान मनसाकरी,
धारो जिनपद सेव ललना ।
श्रीसुपा०

शिव शंकर जगदीश्वरू,
चिदानंद भगवान । ललना ॥
जिन अरिहा तीर्थंकरू,

ज्योतिसरूप असमान ललना

श्रीसुपा०

अलख निरंजन वच्छलू,

सकलजंतु बिसराम। ललना ॥

अभयदान दाता सदा,

पूरण आतमराम। ललना।

श्रीसुपा०

वीतराग मद कल्पना,

रतिअरति भयसोग। ललना ॥

निद्रा तंद्रा दुरंदसा,

रहित अबाधितयोग ललना।

श्रीसुपा०

परमपुरुष परमातमा,

परमेश्वर परधान। लल्ना ॥

परमपदारथ परमेष्टि,
परमदेव परमान । ललना ।
श्रीसुपा०

विधि विरंचि विश्वंभरू,
ऋषिकेश जगनाथ । ललना ॥
अघहर अघमोचन धणी ।
मुक्तिपरमपदसाथ । ललना ।
श्रीसुपा०

एम अनेकअभिधा धरे
अनुभवगम्य विचार । ललना ॥
जेह जाणे तेहने करे,
आनंदघन अवतार । ललना
श्रीसुपा०

श्रीचंद्रप्रभजिन स्तवन ॥

देखणदेरे सखी मुने देखणदे ।
चंद्रप्रभ मुख चंद । सखी० ।
उपशम रसनो कंद । सखी०
गत कलिमल दुखदंद । सखी० ॥१॥
सुहमनिगोदे न देखिओ । स० ।
बादर अतिहि विशेष । स०
पुढवी आउ न लेखियो । स० ।
तेउ वाउ न लेश । स० । चं० ॥२
वनसपति अतिघणदिहा । स० ।
दोठो नहीय दीदार । स० ।
बि ति चउरिंदी जललिहा । स० ।
गतिसन्नी पण धार । स० । चं० ३
सुरितिर निरयनिवासमां । स० ।

मनुज अनारज साथ । स० ।
अपज्जता प्रतिभासमां । स० ।
चतुर न चढीओ हाथ । स० चं ॥४॥
एम अनेक थल जाणिये । स० ।
दरशण विण जिनदेव । स० ।
आगमथी मत जाणिये । स० ।
कीजे निरमल सेव । स० । चं० ५
निरमल साधु भक्ति लही । स० ।
योग अवंचक होय । स० ।
किरिया अवंचक तिम सही स० ।
फल अवंचक जोय स० । चं० । ६॥
प्रेरक अवसर जिनवरू । स० ।
मोहनीय क्षय थाय । स० ।
कामित पूरण सुरतरू । स० ।

आनंदघन प्रभु पाय स० । चं ॥७।

श्रीसुविधिजिन स्तवन ॥

सुविधि जिनेसर पाय नमिने,
शुभकरणी एम कीजेरे ॥
अतिघणो उलट अंग धरीने,
प्रह उठी पूजीजेरे ॥ सुवि० ॥ १ ।
द्रव्यभावसुध्धि भाव धरिने,
हरखे देहरे जइयेरे ॥
दह तिग पण अहिगम साचवतां,
एकमना धुरि थइयेरे ॥ सु० ॥ २ ।
कुसुम अक्षतवर वाससुगंधो,
धूप दीप मनसाखीरे ॥
अंगपूजा पणभेद सुणी एम,

गुरुमुख आगम भाखीरे ॥ सु०॥३॥
एहनुं फल दोय भेद सुणीजे,
अनंतरने परंपररे ॥
आणापालण चित्तप्रसन्नी,
मुगति सुगति सुरमंदिररे सु० ४
फूल अक्षत वरधूप पइवो,
गंध नैवेद्य फल जलभरीरे ॥
अंग अग्र पूजा मिलि अडविध,
भावे भविक शुभगतिवरीरे सु० ५
सत्तरभेद एकवीस प्रकारे,
अष्टोत्तरशत भेदेरे ॥
भावपूजा बहुविध निरधारी,
दोहग दुरगति छेदेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥
तुरियभेद पडिवत्तीपूजा,

उपशम खीण सयोगीरे ॥
चउहापूजा इम उत्तराध्ययणे,
भाखी केवलभोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥
एम पूजा बहुभेद सुणीने,
सुखदायक शुभकरणीरे ॥
भविकजीव करसे ते लेसे,
आनंदघनपद धरणीरे ॥ सु० ॥ ८ ॥

श्रीशीतलजिन स्तवन ॥

शीतलजिनपति ललितत्रिभंगी,
विविधभंगी मनमोहेरे ॥
करुणा कोमलता तीक्षणता,
उदासीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥

सर्वजंतु हितकरणी करुणा,
कर्मविदारण तीक्षणरे ॥
हानादान रहित परिणामि,
उदासीनता विक्षणरे ॥ शी० ॥२॥
परदुखछेदन इच्छा करुणा,
तीक्षण परदुखरीझेरे ॥
उदासीनता उभयविलक्षण,
एकठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥३॥
अभयदान ते मलक्षय करुणा,
तीक्षणता गुणभावेरे ॥
प्रेरणविणुकृत उदासीनता,
इम:विरोधमति नावेरे ॥ शी० ।४।
शक्ति व्यक्ति त्रिभुवनप्रभुता,
निर्ग्रंथता संयोगेरे ॥

योगी भोगी वक्ता मौनी,
अनुपयोगि उपयोगेरे ॥ शी० ॥५॥
इत्यादिक बहुभंग त्रिभंगी,
चमतकार चित्तदेतीरे ॥
अचरिजकारी चित्रविचित्रा,
आनंदघनपद लेतीरे ॥ शी० ॥ ६ ॥

श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी,
आतमरामी नामीरे ॥
अध्यातममत पूरणपामी,
सहज मुगतिगतिगामीरे ॥
श्रीश्रे० ॥ १ ॥
सयलसंसारी इंद्रियरामी,

मुनिगुण आतमरामीरे ॥
मुख्यपणे जे आतमरामी,
ते केवल निःकामीरे ॥ श्रीश्रे० १
निजस्वरूप जे किरियासाधे,
तेह अध्यातम लहियेरे ॥
जे किरियाकरि चउगतिसाधे,
ते न अध्यातम कहियेरे ॥ श्रीश्रे २
नामअध्यातम ठवणअध्यातम,
द्रव्यअध्यातम छंडोरे ॥
भावअध्यातम निजगुणसाधे,
तो तेहसुं रढ मंडोरे ॥ श्रीश्रे॥ ४।
शब्दअध्यातम अरथसुणीने,
निरविकल्प आदरजोरे ॥
शब्दअध्यातम भजनाजाणी,

हानग्रहण मति धरजोरे॥श्रीश्रे॥५॥
अध्यातम जे वस्तुविचारी,
बीजा जाण लबासीरे ॥
वस्तुगते जे वस्तुप्रकासे,
आनंदघन मतवासीरे ॥श्रीश्रे०॥६।

श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन ॥

वासुपूज्यजिन त्रिभुवनस्वामी,
घननामी परनामीरे ॥
निराकार साकार सचेतन,
करम करमफल कामीरे ॥वासु०।१।
निराकार अभेद संग्राहक,
भेदग्राहक साकारोरे ॥
दर्शनज्ञान दुभेद चेतना,

वस्तुग्रहण व्यापारोरे ॥ वासु० ॥२॥
कर्ता परिणामि परिणामो,
कर्म्म जे जोवे करियेरे ॥
एक अनेकरूप नयवादे,
नियते नर अनुसरियेरे॥वासु०॥३॥
दुःखसुखरूप करमफल जाणो,
निश्चय एक आनंदोरे ॥
चेतनता परिणाम न चूके,
चेतन कहे जिनचंदोरे ॥वासु०॥४॥
परिणामि चेतन परिणामो,
ज्ञान करमफल भावीरे ॥
ज्ञानकरमफल चेतन कहिये,
लेजो तेह मनावीरे ॥वासु० ॥ ५॥
आतमज्ञानी श्रमण कहावे,

बीजा तो द्रव्यलिंगीरे ॥
वस्तुगते जे वस्तुप्रकासे,
आनंदघन मतिसंगीरे ॥वासु०॥६॥

श्रीविमलजिन स्तवन ॥

दुखदोहग दुरे टल्यारे,
सुखसंपदसुं भेट ।
धींगधणी माथे कियारे
कुण गंजे नरखेट । विमलजिन,
दीठा लोयण आज ।
मारां सिद्धा वंछितकाज ।
विमलजिन, दीठा० ॥ १ ॥
चरणकमल कमला वसेरे,
निरमल थिरपद देख ॥

समल अथिरपद परिहरीरे,
पंकज पामर पेख। वि। दी० । २॥
मुजमन तुजपद पंकजंरे,
लीनो गुणमकरंद ॥
रंकगणे मंदरधरारे,
इंद चंद नागिंद। वि०। दी ॥ ३॥
साहिब समरथ तुं धणीरे,
पाम्यो परम उदार ॥
मनविसरामी वालहोरे,
आतमचो आधार। वि०। दी० ॥४॥
दरशणदीठे जिनतणोरे,
संशय न रहे वेध ॥
दिनकर करभर पसरंतारे,
अंधकार प्रतिषेध। वि०। दी। ५।

अमीयभरी मूरति रचीरे,
उपमा न घटे कोय ॥
शांतसुधारस झीलतीरे,
निरखत तृपति न होय वि।दी॥६॥
एक अरज सेवकतणीरे,
अवधारो जिनदेव ॥
कृपाकरो मुज दीजीयेरे,
आनंदघन पद सेव । वि । दी ॥७॥

श्री अनंतजिन स्तवन ॥

धार तरवारनी सोहिली दोहिली,
चउदमा जिनतणी चरणसेवा ॥
धारपर नाचता देख बाजीगरा,
सेवना धारपर रहे न देवा धा० १

एककहे सेवियेे विविध किरियाकरि,
फल अनेकांत लोचन न देखे ॥
फलअनेकांत किरियाकरी बापडा,
रडवडे चारगतिमांहें लेखे धा० २
गच्छना भेदबहु नयण निहालतां,
तत्त्वनी बात करतां न लाजे ॥
उदरभरणादि निजकाजकरतां थकां
मोह नडिया कलिकालराजे धा० ३
वचननिरपेक्ष व्यवहार झूठो कह्यो,
वचनसापेक्ष व्यवहार साचो ॥
वचननिरपेक्ष व्यवहार संसारफल,
सांभली आदरी कांइ राचो धा० ४
देवगुरुधर्मनी शुद्धि कहो किम रहे
किम रहे शुद्धश्रद्धान आणो ॥

शुद्धश्रद्धान विण सर्वकिरियाकरि,
छारपर लीपणो तेह जाणो धा० ५
पापनहीं कोइ उ-सूत्रभाषणजिशो,
धर्मनहीं कोइ जग सूत्रसरिखो ॥
सूत्रअनुसार जे भविक किरियाकरे
तेहनो शुद्धचारित्र परिखो धा० ६
एह उपदेशनो सार संक्षेपथी,
जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥
ते नरा दीव्य बहुकाल सुख-
अनुभवी,
नियत आनंदघनराज पावे धा० ७

श्री धर्मजिन स्तवन ॥

धरमजिनेसर गाउं रंगसुं,

भंग म पडसो हो प्रीत । जिनेसर।
बीजो मनमंदिर आणुं नहीं,
ए अमकुल वट रीत । जि० धर्म १
धरमधरमकरतो जग सहु फिरे,
धरम न जाणे होमर्म । जि० ।
धरमजिनेसरचरण ग्रह्या पछी,
कोइ न बांधे होकर्म । जि० । धर्म २
प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे,
देखे परमनिधान । जि० ।
हृदयनयण निहाले जगधणी,
महिमा मेरुसमान । जि० धर्म० ।३।
दोडतदोडत दोडत दोडीओ,
जेती मननी रे दोड । जि० ।
प्रेमप्रतीत विचारो ढूंकडी,

गुरुगम लेजोरे जोड जि॰ धर्म॰ ।४।
एकपखी केम प्रीति वरें पडे,
उभय मिल्याहोय संधि । जि॰ ।
हुं रागी हुं मोहे फंदिओ,
तुं निरागी निरबंध जि॰ । धर्म॰ ५
परमनिधान प्रगट मुखआगलें,
जगत उलंघी हो जाय । जि॰ ।
ज्योतिबिना जुओ जगदीशनी,
अंधोअंध पुलाय । जि॰ धर्म॰ ॥६॥
निरमल गुणमणि रोहण भूधरा,
मुनिजन मानसहंस । जि॰ ।
धन्य ते नगरी धन्य वेला घडी,
मातपिता कुलवंश । जि॰ धर्म॰ ।७।
मन मधुकरवर करजोडी कहे,

पद्पंकज निकट निवास । जि० ।
घननामी आनंदघन सांभलो,
ए सेवक अरदाश । जि० । धर्म० ८

श्री शांतिजिन स्तवन ॥

शांतिजिन एक मुज वीनती,
सुणो त्रिभुवनराय रे ।
शांतिसरूप किम जाणिये,
कहो मन किम परखायरे शांति० १
धन्य तुं आतम जेहने,
एहवो प्रश्नअवकाश रे ।
धीरज मनधरी सांभलो,
कहुं शांतिप्रतिभासरे । शांति० २
भाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे,

कह्या श्रीजिनवर देवरे ।
ते तेम अवितत्थ सद्दहे,
प्रथम ए शांतिपद सेवरे । शांति० ३
आगमधर गुरु समकीति,
किरिया संवर साररे ।
संप्रदायी अवंचक सदा,
सुची अनुभव आधाररे शांति० ४
शुद्ध आलंबन आदरे,
तजी अवर जंजालरे ।
तामसीवृत्ति सवि परिहरी,
भजे सात्त्विकी सालरे । शांति० ५
फलविसंवाद जेमां नहीं,
शब्द ते अर्थसंबंधी रे ।
सकल नयवाद व्यापि रह्यो,

ते शिवसाधन संधीरे शांति० ॥६॥

विधि प्रतिषेधकरी आतमा,
पदारथ अविरोधरे।
ग्रहणविधि महाजने परिग्रह्यो,
एहवो आगमें बोधरे। शांति० ७

दुष्टजन संगति परिहरी,
भजे सुगुरुसंतान रे।
जोगसामर्थ्य चित्तभाव जे,
धरे मुगतिनिदान रे शांति० ॥८॥

मानअपमान चित्त समगणे,
समगणे कनक पाषाण रे।
वंदक निंदक समगणे,

एहवो होय तुं जाण रे। शांति ।९.

सर्व जगजंतुने समगणे,
गणे तृणमणि भाव रे।
मुक्तिसंसार बेहु समगणे,
मुणे भवजलनिधिनाव रे शांति१०

आपणो आतमभाव जे,
चेतना एक आधार रे।
अवर सविसाथ संयोगथी,
एह निज परिकर सार रे शांति०११

प्रभुमुखथी एम सांभली,
कहे आतमराम रे।
ताहरे दरशणे निस्तर्यो,
मुज सिद्धा सवी काम रे शांति० १२

अहोअहो हुं मुजने कहुं,

नमो मुज नमो मुज रे।
अमित फल दानदातारनी,
जेहथी भेटथइ तुज रे शांति० ।१३।

शांतिसरूप संक्षेपथी,
कह्यो निजपररूप।
आगममांहे विस्तारघणो,
कह्यो शांतिजिन भूप रे शांति०१४

शांतिसरूप एम भावसे,
धरी शुद्ध प्रणिधानरे।
आनंदघनपद पामसे,
ते लहेसे बहु मान रे शांति० ।१५।

श्रीकुंथुजिन स्तवन ॥

मनडुं किमही न बाझे हो कुंथुजिन
मनडुं किमही न बाझे ।
जिमजिम जतन करीने राखूं,
तिमतिम अलगुं भाजे हो कुं ॥१॥

रजनीवासर वसतीउजड,
गयण पायाले जाय ।
साप खायने मुखडुं थोथुं,
एह ऊखाणो न्यायहो । कुं० ॥२॥

मुगतितणा अभिलाषी तपीया,
ज्ञाननेध्यान अभ्यासे ।
वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते,
नांखे अवले पासेहो । कुं० ॥ ३ ॥

आगम आगमधरने हाथे,

नावे किणविधि आंकुं, ।
किह्वांकणे जो हठकरी हटकुं,
तो व्यालतणीपरे वांकुंहो कुं० ॥४॥

जो ठग कहुंतो ठगतो न देखुं,
साहुकार पण नाहीं ।
सर्वमांहेने सहुथी अलगुं,
ए अचरिज मनमांहींहो । कुं० ॥५॥

जे जे कहुंते कान न धारे,
आपमते रहे कालो ।
सुर नर पंडितजन समजावे,
समजे न माहरो सालोहो कुं० ।६।

में जाण्युं ए लिंग नपुंसक,
सकल मरदने ठेले ।

बीजीबाते समरथ छे नर,
एहने कोइ न जेलेहो । कुं० ॥ ७ ॥
मनसाध्युं तेणे सघलुं साध्युं,
एह वात नहीं खोटी ।
एम कहे साध्युं ते नबीमानुं,
एकही बातछे मोटीहो । कुं० ॥८॥
मनडुं दुराराध्य तें वश आण्युं,
ते आगमथी मतिआणुं ।
आनंदघनप्रभु माहरूं आणो,
तो साचुंकरी जाणुंहो । कुं० ॥ ९ ॥

श्रीअरजिन स्तवन ॥

धरम परम अरनाथनो,

किम जाणुं भगवंतरे ।
स्वपरसमय समजावियें,
महिमावंत महंत रे । ध० ॥ १ ॥
शुद्धातम अनुभव सदा,
स्वसमय एह विलासरे ।
परवडी छांहडी जेह पडे,
ते परसमय निवासरे । ध० ॥ २ ॥
तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी,
ज्योति दिनेश मझाररे ।
दर्शन ज्ञानचरणथकी,
शक्ति निजातम धाररे । ध० ॥ ३ ॥
भारी पीलो चीकणो,
कनक अनेकतरंगरे ।
पर्यायदृष्टि न दीजीये,

एकज कनक अभंगरे । घ० ॥ ४ ॥
दरशण ज्ञान चरणथकी,
अलख सरूप अनेकरे ।
निरविकल्प रस पीजिये,
शुद्ध निरंजन एकरे । घ० ॥ ५ ॥
परमारथ पंथ जे कहे,
ते रंजे एक तंतरे ।
व्यवहारे लख जे रहे,
तेहना भेद अनंतरे । घ० ॥ ६ ॥
व्यवहारे लखे दोहिला,
कांइ न आवे हाथरे ।
शुद्ध नयथापना सेवतां,
नवी रहे दुविधा साथरे । घ० ॥७॥
एकपखी लखि प्रीतनी,

तुमसाथे जगनाथरे ।
कृपाकरीने राखजो,
चरणतले ग्रही हाथरे । ध० ॥ ८ ॥
चक्री धरमतीरथ तणो,
तीरथ फल तत्त साररे ।
तीरथ सेवे ते लहे,
आनंदघन निरधाररे । ध० ॥ ९ ॥

श्रीमल्लिजिन स्तवन ॥

सेवक किम अवगणियेहो,
मल्लिजिन, ए अब शोभा सारी ।
अवर जेहने आदर अतिदीये,
तेहने मूल निवारीहो । मल्लि० ।१
ज्ञानसुरूप अनादि तमारुं,

ते लीधुं तमें ताणी ।
जुओ अज्ञानदशा रीसावी,
जातां काण न आणी हो । मल्लि० २
निद्रा सुपन जागर उजागरता,
तुरिय अवस्था आवी ।
निद्रा सुपनदशा रीसाणी,
जाणी न नाथ मनावीहो । मल्लि० ३
समकीत साथे सगाइ कीधी,
सपरिवारसुं गाढी ।
मिथ्यामति अपराधण जाणी,
घरथी बाहिर काढीहो । मल्लि० ४
हास्य अरति रति शोक दुगंछा,
भय पामर करसाली ।
नोकषाय श्रेणीगज चढतां,

श्वानतणी गति ह्मालीह्रो । मल्लि० ५
रागद्वेष अविरतिनी परिणति,
चरणमोहना योधा ।
वीतराग परिणति परणमतां,
उठी नाठा बोधाह्रो । मल्लि० ॥६॥
वेदोदय कामा परिणामा,
काम्यकर सहु त्यागी ।
निष्कामी करुणासागर,
अनंत चतुष्कपद पागीह्रो । मल्लि० ७
दानविघन वारी सहु जनने,
अभयदान पद दाता ।
लाभविघन जगविघन निवारक,
परम लाभ रसमाताह्रो । मल्लि० ८
वीर्यविघन पंडितवीर्ये हणी,

पूरणपद्वी योगी।
भोगोपभोग दोयविघन निवारी,
पूरणभोग सुभोगीहो। मल्लि० ॥९॥
ए अढारदूषण वरजित तनु,
मुनिजनवृंदे गाया।
अविरतिरूपक दोषनिरूपण,
निरदूषण मन भायाहो मल्लि० १०
इणविध परखी मनविसरामी,
जिनवर गुण जे गावे।
दीनबंधुनी महेर नजरथी,
आनंदघनपद पावेहो। मल्लि० ।११।

श्रीमुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥

मुनिसुव्रतजिनराय एक मुजवीनति

निसुणो ।

आतमतत्त्व क्युं जाण्युं जगतगुरु,

एह विचार मुजकहियो ।

आतमतत्त्व जाण्याविण निरमल,

चित्तसमाधि नविलहियो । मु० १

कोइ अबंध आतमतत्त माने,

किरिया करतो दीसे ।

क्रियातणुंफल कहो कुणभोगवे,

इमपूछयुं चित्तरीसे । मु० ॥ २ ॥

जडचेतन ए आतम एकज,

थावरजंगम सरिखो ।

दुःखसुख शंकर दूषण आवे,

चित्तविचारी जो परिखो मु० ॥३॥

एककहे नित्यज आतमतत्त,

आतम दरशण लीनो ।
कृतविनाश अकृतागमदूषण,
नवीदेखे मतहीनो । मु० ॥ ४ ॥
सुगतिमतिरागी कहे वादी,
क्षणिक ए आतम जाणो ।
बंधमोक्ष सुखदुख न घटे,
एह विचार मनआणो । मु० ॥ ५ ॥
भूतचतुष्क वरजित आतमतत्त,
सत्ता अलगी न घटे ।
अंध शकट जो नजर न देखे,
तो शुं कीजें शकटे । मु० ॥ ६ ॥
एम अनेक वादी मतविभ्रम,
संकट पडियो न लहे ।
चित्तसमाधि ते माटे पुछुं,

तुमविण तत्त कोइ न कहे । मु० ७

वलतुं जगगुरु इणिपरे भाषे,

पक्षपात सबछंडी ।

राग द्वेष मोहपख वर्जित,

आतमसुं रढ मंडी । मु० ॥ ८ ॥

आतमध्यान करे जो कोउ,

सो फिरइणमें नावे ।

वागजाल बीजुं सहुजाणे,

एह तत्त्व चित्त चावे । मु० ॥ ९ ॥

जेणे विवेकधरी ए पख ग्रहिये,

ते तत्तज्ञानी कहिये ।

श्रीमुनिसुव्रत कृपाकरो तो,

आनंदघनपद लहिये । मु० ॥ १० ॥

श्रीनमिजिन स्तवन ॥

षटदरसण जिनअंग भणीजे,
न्यासषडंग जो साधेरे ।
नमिजिनवरना चरणउपासक,
षटदरशन आराधेरे । षट० ॥ १ ॥

जिनसुरपादप पाय वखाणुं,
सांख्यजोग दोय भेदेरे ।
आतमसत्ता विवरणकरता,
लहो दुगअंग अखेदेरे । षट० ॥ २ ॥
भेदअभेद सुगतमीमांसक,
जिनवर दोय करभारीरे ।
लोकालोक अवलंबन भजिये,
गुरुगमथी अवधारीरे । षट० ॥ ३ ॥

लोकायतिक कूख जिनवरनी,
अंशविचारी जो कीजेरे ।
तत्त्वविचार सुधारस धारा,
गुरुगमविण किम पीजेरे।षट० ॥४॥
जैन जिनेश्वर वर उत्तमअंग,
अंतरंग बहिरंगेरे ।
अक्षरन्यास धरा आधारक,
आराधे धरीसंगेरे । षट० ॥ ५ ॥
जिनवरमां सघला दरशण छे,
दर्शने जिनवरभजनारे ।
सागरमां सघली तटिनी सही,
तटिनीमां सागरभजनारे।षट० ॥६॥
जिनस्वरूप थइ जिन आराधे,
ते सही जिनवर होवेरे ।

भृंगी ईलीकाने चटकावे
ते भृंगी जगजोवेरे । षट ॥ ७ ॥
चूरणि भाष्य सूत्र नियुंक्ति,
वृत्ति परंपरा अनुभवरे ।
समयपुरुषना अंग कह्याए,
जे छेदे ते दुरभवरे । षट० ॥ ८ ॥
मुद्रा बीजधारणा अक्षर,
न्यास अरथ विनियोगेरे ।
जे ध्यावे ते नवि वंचीजे,
क्रिया अवंचक भोगेरे । षट० ९॥
श्रुतअनुसार विचारी बोलुं,
सुगुरु तथाविध न मिलेरे ।
किरियाकरी नवि साधि सकीये,
ए विषवाद चित्त सघलेरे ।षट० १०

ते माटे उभा करजोडी,
जिनवर आगल कहीयेरे ।
समय चरणसेवा शुद्ध देजो,
जिम आनंदघन लहीयेरे।षट०॥११।

श्रीनेमिनाथजिन स्तवन॥

अष्ट भवांतर वालही रे,
तुं मुज आतमराम । मनरावाला ।
मुगतिस्त्रीसुं आपणेरे,
सगपण कोइ न काम । म० ॥१ ॥
घरआवो हो वालम घरआवो,
मारी आशाना विशराम । म० ।
रथफेरो हो साजन रथफेरो,
साजन मारा मनोरथ साथ ।म०।२।

नारीपखो स्यो नेहलो रे,

साच कहे जग नाथ । म० ।

ईश्वर अरधंगे धरीरे,

तुं मुज झाले न हाथ । म० ॥ ३ ॥

पशुजननी करुणा करीरे,

आणीहृदय विचार ॥ म० ॥

माणसनी करुणा नहींरे,

ए कुण घर आचार । म० ॥ ४ ॥

प्रेम कल्पतरु छेदीयोरे,

धरियो जोग धतूर । म० ।

चतुराइरो कुण कहोरे,

गुरु मिलियो जग सूर । म० ॥ ५

मारुंतो एमां क्युं ही नहींरे,

आप विचारो राज । म० ।

राजसभामें वेसतांरे,
किसडी वधसी लाज । म० ॥ ६ ॥
प्रेमकरे जग जनसहुरे,
निरवाहे ते ओर । म० ।
प्रीतकरीने छोडी देरे,
तेसुं न चाले जोर । म० ॥ ७ ॥
जो मनमां एहवुं हतुंरे,
निसपत करत न जाण । म० ।
निसपतकरीने छांडतांरे,
माणस हुये नुकसाण । म० ॥ ८ ॥
देतां दान संवत्सरीरे,
सहु लहे वंछितपोष । म० ।
सेवक वंछित नवी लहेरे,
ते सेवकनो दोष । मन० ॥ ९ ॥

सखी कहे ए सामलो रे,
हुं कहुं लक्षण सेत । म० ।
इण लक्षण साची सखीरे,
आप विचारो हेत । म० ॥ १० ॥
रागीसुं रागी सहुरे,
वैरागी स्यो राग । म० ।
रागबिना किम दाखवोरे,
मुगतिसुंदरी माग । म० ॥ ११ ॥
एकगुह्य घटतुं नथीरे,
सघलोई जाणे लोक । म० ।
अनेकांतिक भोगवोरे,
ब्रह्मचारी गतरोग । म० ॥ १२ ॥
जिण जोणी तुमने जोउंरे,
तिण जोणी जुओ राज । म० ।

एकवार मुजने जुओरे,

तो सीझे मुज काज । म० ॥ १३ ॥

मोहदशा धरी भावनारे,

चित्त लहे तत्त्वविचार । म० ।

वीतरागता आदरीरे,

प्राणनाथ निरधार । म० ॥ १४ ॥

सेवक पण ते आदरेरे,

तो रहे सेवक माम । म० ।

आशयसाथे चालीयेरे,

एहीज रूडुं काम । म० ॥ १५ ॥

त्रिविधयोग धरी आदर्योरे,

नेमिनाथ भरतार । म० ।

धारण पोषण तारणोरे,

नव रस मुगताहार । म० ॥ १६ ॥

कारणरूपी प्रभु भज्योरे,
गण्यो न काज अकाज । म० ।
कृपाकरी मुजदीजीयेरे,
आनंदघनपद राज । म० ॥ १७ ॥

श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

ध्रुवपदरामी होस्वामिमाहरा,
निकामी गुणराय । सुग्यानी ।
निजगुणकामी होपामी तुं धणी,
ध्रुव आरामी हो थाय । सु० ध्रु० १
सर्वव्यापी कहे सर्वजाणग पणे,
पर परिणमन सरूप । सु० ।
पररूपेकरी तत्त्वपणुं नहीं,
स्वसत्ता चिद्रूप । सु० । ध्रु० ॥२॥

ज्ञेयअनेके होज्ञान अनेकता,
जलभाजन रवि जेम । सु० ।
द्रव्यएकत्वपणे गुणएकता,
निजपद रमता होखेम ।सु०।ध्रु ॥३॥
परक्षेत्रे गत ज्ञेयने जाणवे,
परक्षेत्रे थयुं ज्ञान । सु० ।
अस्तिपणुं निजक्षेत्रे तुमे कह्युं,
निर्मलता गुणमान । सु० । ध्रु ॥४॥
ज्ञेयविनाशे होज्ञान विनिश्वरू,
कालप्रमाणेरे थाय । सु० ।
स्वकालेकरी स्वसत्ता सदा,
ते पररीते न जाय । सु० । ध्रु ॥५॥
परभावेकरी परता पामता,
स्वसत्ता थिरठाण ।।सु० ।

आत्मचतुष्कमयी परमां नहीं,
तो किम सहुनो रे जाण ।सु।ध्रु॥६॥
अगुरुलघु निजगुणने देखतां,
द्रव्य सकल देखंत । सु० ।
साधारण गुणनी साधर्म्यता,
दर्प्पण जल दृष्टांत सु० । ध्रु ॥७॥
श्रीपारसजिन पारसरस समो,
पण इहां पारस नाहिं । सु० ।
पूरणरसीओ होनिजगुण परसनो,
आनंदघन मुज मांहि ।सु०।ध्रु०॥८॥

पासजिन ताहरा रूपनुं,
मुज प्रतिभास किम होयरे ।
तुज मुजसत्ता एकता,
अचल विमल अकल जोयरे । पा० १

मुज प्रवचन पक्षथी,
निश्चय भेद न कोयरे ।
व्यवहारे लखि देखीये,
भेद प्रतिभेद बहु लोयरे पास० ॥२॥
बंधनमोख नहीं निश्चये,
व्यवहारे भज दोयरे ।
अखंडित अबाधित सोय कदा,
नित अबाधित सोयरे । पास० ॥३॥
अन्वय हेतु व्यतिरेकथी,
अंतरो तुज मुज रूपरे ।
अंतर मेटवा कारणे,
आत्मस्वरूप अनूपरे । पास० ॥४॥
आतमता परमात्मता,
शुद्ध नय भेद न एकरे ।

अवर आरोपित धर्मछे.
तेहना भेद अनेकरे । पास० ॥ ५ ॥
धरमो धरमथी एकता,
तेह मुज रूप अभेदरे ।
एकसत्ता लख एकना,
कहे ते मूढमति खेदरे । पास० ॥६॥
आतमधरम अनुसरी,
रमे जे आतमरामरे ।
आनंदघन पदवी लहे,
परम आतम तस नामरे पास० ॥७॥

श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

वीरजिनेश्वर चरणे लागुं,
वीरपणुं ते मागुंरे ।

मिथ्या मोह तिमिर भयभाग्युं,
जित नगारुं वाग्यु । वी० ॥ १ ॥
छउमथ्थ वीरय लेश्यासंगे,
अभिसंधिज मति अंगेरे ।
सुक्षम थूलक्रियाने रंगे,
योगी थयो उमंगेरे । वी० ॥ २ ॥
असंख्यप्रदेशे वीर्यअसंखे,
योग असखित कंखेरे ।
पुद्गलगण तेणे ले सुविशेषे,
यथाशक्ति मति लेखेरे । वी० ॥३॥
उत्कृष्टे वीरयने वेसे,
योगक्रिया नवी पेसेरे ।
योगतणी ध्रुवताने लेसे

आतमशक्ति न खेसेरे । वी० ॥४॥
काम वीर्यवशे जिम भोगी,
तिम आतम थयो भोगीरे ।
सूरपणे आतम उपयोगी,
थाय तेहने अयोगीरे । वी० ॥ ५ ॥
वीरपणुंते आतमठाणे,
जाण्युं तुमची वाणेरे ।
ध्यानविनाणे शक्तिप्रमाणे,
निज ध्रुवपद पहिचाणेरे । वी० ॥६॥
आलंबन साधन जे त्यागे,
पर परिणतिने भागेरे ।
अक्षयदर्शन ज्ञानवैरागे,
आनंदघन प्रभु जागेरे । वी० ॥ ७ ॥

चरम जिणेसर विगत स्वरूपनुरे,
भावुं केम सरूप ।
साकारी विण ध्यान न संभवेरे,
ए अविकार अरूप । चरम० ॥ १ ॥
आप सरूपे आतममां रमेरे.
तेहना धुर बे भेद ।
असंख उक्कोसे साकारी पदेरे,
निराकारी निरभेद । चरम० ॥ २ ॥
सूखम नाम करम निराकारजेरे.
तेह भेदे नहीं अंत ।
निराकारजे निरगतकर्मथीरे,
तेह अभेद अनंत । चरम० ॥ ३ ॥
रूपनहीं कहर्ये बंधन घटयुंरे,

बंध न मोक्ष न कोय ।
बंधमोक्षविण सादिअनंतनुंरे,
भंगसंग किम होय । चरम० ॥ ४॥
द्रव्यविना तिम सत्ता नवी लहेरे,
सत्ताविण स्यो रूप ।
रूपविना किम सिद्धअनंततारे,
भावुं अकलसरूप । चरम० ॥ ५ ॥
आतमता परिणति जे परिणम्यारे,
ते मुज भेदाभेद ।
तदाकारविण मारा रूपनुंरे,
ध्यावुं विध प्रतिषेध । चरम० ॥६॥
अंतिम भवगहणे तुज भावनुंरे,
भावसुं शुद्धसरूप ।

तइये आनंदघनपद पामसुंरे,
आतमरूप अनूप । चरम० ॥ ७ ॥

तत्--ॐ--सत्.

श्रीमद् आनंदघनजीकृत स्तवनो.

श्रीपार्श्वनाथ स्वामीजीनुं स्तवन

प्रणमुं पद पंकज पार्श्वना, जस वा-
सना अगम अनूपरे, मोह्यो मन
मधुकर जेहथी पामे निज शुद्ध
स्वरूपरे. प्रणमुं० १ पंक कलंक शं-
का नहि, नहीं खेदादिक दुःख दो-
षरे; त्रिविध अवंचक जोगथी, ल-
हे अध्यातम सुख पोषरे. प्रणमुं०
२ दुरंदशा दूरे टळे, भजे मुदिता

मैत्रि भावरे; वरते नित्य चित्त मध्यस्थता, करूणामय शुद्ध स्वभावरे. प्रणमुं० ३ निज स्वभाव स्थिर कर धरे, न करे पुद्गलनी खंचरे साखी हुइ वरते सदा, न कदा परभाव प्रपंचरे. प्रणमुं० ४ सहज दशा निश्चय जगे, उत्तम अनुभव रसरंगरे, राचे नही परभावसुं, निज भावशुं रंग अभंगरे. प्रणमुं ५ निजगुण सब निजमां लखे, न चखे परगुणनी रेखरे, खीर नीर-विवरो करे, ए अनुभव हंस सुपेखरे. प्रणमुं० ६ निर्विकल्प ध्येय अनुभवे अनुभव अनुभवनी प्रीत-

, ओरन कबहुं लखी शके आनं-
द घन प्रित प्रतीत रे. प्रणमुं० ७



श्री. वीर स्वामीजीनुं स्तवन.

वीर जिनेश्वर परमेश्वर जयो, ज-
गजीवन जिनभूप, अनुभव मिते-
रे चित्ते हित करी, दाख्युं तास स्व-
रूप. वीर० १ जेह अगोचर मान-
स वचनने, तेह अतींन्द्रिय रूप; अ-
नुभव मित्तेरे व्यक्ति शक्तिसुं, भा
ख्युं तास स्वरूप. वीर० २ नय
निक्षेपे जे न जाणीये, नवि जीहां
प्रसरे प्रमाण; शुद्ध स्वरूपेरे ते ब्रह्म

दाखवे, केवळ अनुभव भाण. वी-
र० ३ अगम अगोचर अनुपम अर्थ
नो, कोण करी जाणेरे भेद; सहज
विशुद्धेरे अनुभव वयण जे, शास्त्र
ते सघळा रे खेद. वीर ४ दिशी दे-
खाडी रे शास्त्र सवी रहे, न लहे
अगोचर वात; कारज साधक बा-
धक रहित जे, अनुभव मित्त वि-
ख्यात. वीर० ५ अहो चतुराइ रे
अनुभव मित्तनी, अहो तस प्रीत
प्रतीत. अंतरजामी स्वामी समीप
ते, राखी मित्र सुं रीत.. वीर० ६
अनुभव संगेरे रंगे प्रभु मल्या, स-
फळ फळ्या सविकाज; निजपद

संपद जे ते अनुभवे, आनंदघन महाराज. वीर० ७

अन्तिमजो दो स्तवन

(" प्रणमुं पदपंकज पार्श्वना " और " वीरजिनेश्वर परमेश्वर जयो ") हे सो खुद आनंदघनजी महाराजके बनाये हुए प्राचीन भंडरोसे मिलजानेसे सम्मिलीत कियेहे

॥ इति आनन्दघनजी कृत ॥

॥ चोवीशी समाप्त ॥

सुखसागरज्ञानबिन्दु नं १३

श्री देवचंद्रजी कृत

चौविशी

श्री ऋषभनाथ जिन स्तवन. ॥

(निद्रडी वेरण हुइ रहीरे-ए देशी)

ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी।
कीम कीजे हो कहो चतुर विचार
प्रभुजी जइ अलगा वस्या।
तिहां किणे नवि हो कोइ वचन
उच्चार ऋषभ० ॥ १ ॥

कागळ पण पहोंचे नहीं ।

नवि पहोंचे हो तिहां को परधान

जे पहोंचे ते तुम समो ।

नवि भाँखेहो कोई नुं व्यवधान॥ऋ०२

प्रीति करे ते रागीया ।

जिनवरजी हो तुमे तो वीतराग ॥

प्रीतडी जेह अरागीथी ।

मेलववी ते लोकोत्तरमाग॥ऋ०३॥

प्रीति अनादिनी विष भरी।

ते रीते हो करवा मुज भाव ॥

करवी निर्विष प्रीतडी ।

किण भांते हो कहो बने बनाव ऋ०४

प्रीति अनंती परथकी ।
जे तोडे हो ते जोडे एह ॥
परम पुरुषथी रागता ।
एकत्वता हो दाखी गुण गेह ॥ऋ५

प्रभुजीने अवलंबतां ।
निज प्रभुता हो प्रगटे गुणराश ॥
देवचंद्रनी सेवना ।
आपे मुझ हो अविचल सुखवास ६

॥ अजित जिन स्तवन ॥

[देखो गति दैवनीरे–ए देशी.]

ज्ञानादिक गुण संपदारे ।
तुझ अनंत अपार ॥

ते सांभळतां उपनोरे ।
रुचि तेणें पार उतार ॥
अजित जिन तारजोरे ।
तारजो दीनदयाल-अजितजिन
तारजोरे. ॥ १ ॥

जे जे कारण जेहनुंरे ।
सामग्री संयोग ।
मिलतां कारज निपजेरे ।
करता तणे प्रयोग ॥ अजित० २ ॥

कार्य सिद्धि करता वसुरे ।
लहि कारण संयोग ॥
निज पद कारक प्रभु मल्यारे ।
होए निमित्तह भोग ॥ अजित० ३

अज कुलगत केसरी लहेरे ।
निज पद सिंह निहाल ॥
तिम प्रभु भक्ते भवि लहेरे ।
आतम शक्ति संभाल ॥ अजित ४

कारण पद कर्त्तापणेरे ।
करी आरोप अभेद ॥
निजपद अर्थी प्रभु थकीरे ।
करे अनेक उमेद ॥ अजित० ॥ ५ ॥

एहवा परमातम प्रभुरे ।
परमानंद स्वरूप ॥
स्याद्वाद सत्ता रसीरे ।
अमल अखंड अनूप ॥ अजित० ६

आरोपित सुख भ्रम टल्योरे ।
भास्यो अव्याबाध ॥
समर्युं अभिलाषीपणुंरे ।
कर्त्ता साधन साध्य ॥ अजित० ७

ग्राहकता स्वामीत्वतारे ।
व्यापक भोक्ता भाव ॥
कारणता कारज दशारे ।
सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ अ० ८ ।

श्रद्धा भासन रमणतारे ।
दानादिक परिणाम ॥
सकल थया सत्ता रसीरे ।
जिनवर दरिशण पाम ॥ अजित० ९

तेणे निर्यामक माह्णोरे।
वैद्य गोप आधार ॥
देवचंद्र सुख सागरूरे।
भाव धर्म दातार ॥ अजित० १० ॥

॥ श्री संभव जिन स्तवन ॥

(घणारा ढोला–ए देशी.)

श्री संभव जिन राजजीरे।
ताहरूं अकल स्वरूप॥ जिनवर पूजो॥
स्वपरप्रकाशक दिनमणीरे।
समता रसनो भूप ॥ जि० १ ॥
पूजो पूजोरे भविक जिन पुजो।
हांरे प्रभु पूज्यां परमानंद॥ जि०॥ टेक

अविसंवाद निमित्त छोरे ।
जगत जंतु सुखकाज ॥ जि० ॥

हेतु सत्य बहु मानथीरे ।
जिन सेव्या शिवराज ॥ जि० २ ॥

उपादान आतम सहीरे ।
पुष्टालंबन देव । जि० ॥

उपादान कारणपणेरे ।
प्रगट करे प्रभु सेव ॥ जि० ३ ॥

कार्य गुण कारणपणेरे ।
कारण कार्य अनूप ॥ जि० ॥

सकल सिद्धता ताहरीरे ।
माहारे साधन रूप ॥ जि० ४ ॥

एकवार प्रभु वंदनारे ।
आगम रीते थाय ॥ जि० ॥

कारण सत्ते कार्यनीरे ।
सिद्धि प्रतीत कराय ॥ जि० ५ ॥

प्रभु पणे प्रभु ओलखी ।
अमल विमल गुण गेह ॥ जि० ॥

साध्य दृष्टि साधकपणेरे ।
वंदे धन्य नर तेह ॥ जि० ६ ॥

जन्म कृतारथ तेहनोरे ।
दिवस सफल पण तास ॥ जि० ॥

जगत शरण जिन चरणनेरे ।
वंदे धरीय उल्लास जि० ॥ ७ ॥

निज सत्ता निज भावथीरे ।
गुण अनंतनो ठाण ॥ जि० ॥
देवचंद्र जिनराजजीरे ।
शुद्ध सिद्ध सुख खाण ॥ जि० ८ ॥

॥श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

[ब्रह्मचर्य पद पूजिए–ए देशी.]

क्युं जाणुं क्युं बनी आवशे ।
अभिनंदन रस रीत हो मित्त ॥
पुद्गल अनुभव त्यागथी ।
करवी जसु परतीत हो मित्त ॥ क्युं
परमातम परमेसरु ।
वस्तुगते ते अलिप्त हो मित्त ॥

द्रव्ये द्रव्य मळे नहिं ।
भावे ते अन्य अव्याप्त हो मित्त
॥ क्यु. २ ॥

शुद्ध स्वरूप सनातनो ।
निर्मळ जे निस्संग हो मित्त ॥
आत्म विभूति परिणम्यो ।
न करे ते परसंग हो मित्त क्युं. ३॥
पण जाणुं आगम बले ।
मिलवुं तुम प्रभु साथ हो मित्त ॥
प्रभु तो स्वसंपतिमयी ।
शुद्ध स्वरूपनो नाथ हो मित्त
॥ क्युं० ४ ॥
परपरिणामिकता अछे ।

जे तुज पुद्गल योग हो मित्त ॥
जडचल जगनि एठनो ।
न घटे तुजने भोग हो मित्त क्युं ५ ॥
शुद्ध निमित्ती प्रभु ग्रहो ।
करी अशुद्ध परहेय हो मित्त ॥
आत्मालंबी गुण लही ।
सहु साधकनो ध्येय हो मित्त क्युं. ६
जिम जिनवर आलंबने ।
वधे सधे एक तान हो मित्त ॥
तेम तेम आत्मालंबनी ।
ग्रहे स्वरूप निदान हो मित्त क्युं. ७॥
स्व स्वरूप एकत्वता ।
साधे पूर्णानंद हो मित्त ॥

रमे भोगवे आतमा ।
रत्नत्रयी गुण वृंद हो मित्त
॥ क्युं० ८ ॥
अभिनंदन अवलंबने ।
परमानंद विलास हो मित्त ॥
देवचंद्र प्रभु सेवना ।
करी अनुभव अभ्यास हो मित्त
॥ क्युं० ९ ॥

॥ श्री सुमति जिन स्तवन ॥

(कडखानी देशी)

अहो श्री सुमतिजिन शुद्धता ताहरी
स्वगुण पर्याय परिणाम रामी ॥
नित्यता एकता अस्तिता इतर युत ।

भोग्य भोगी थको प्रभु अकामी
॥ अहो० १ ॥

ऊपजे व्यय लहे तहवि तेहवो रहे
गुण प्रमुख बहुलता तहवि पिंडो ॥
आत्म भावे रहे अपरता नवि ग्रहे
लोक परदेश मित पण अखंडी ॥
॥ अहो० २ ॥

कार्य कारणपणे प्रणमे तहवि ध्रुव ।
कार्य भेदे करे पण अभेदी ।
कर्तृता परिणमे नव्यता नवि रमे ।
सकल वेत्ता थको पण अवेदी अ०३

शुद्धता बुद्धता देव परमात्मता ।
सहज निज भाव भोगी अयोगी ॥

स्वपर उपयोगी तादात्म्य सत्तारसी
शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी ॥ अ० ४
वस्तु निज परिणते सर्व
परिणामिकी ।

एटले कोई प्रभुता न पामे ॥
करे जाणे रमे अनुभवे ते प्रभु ।
तत्व स्वामित्व सुचितत्त्व धामे
॥ अ० ५ ॥

जीव नवि पुग्गलो नैव पुग्गल कदा
पुग्गलाधार नहीं तास रंगी ।
परतणो ईश नही अपर ऐश्वर्यता ।
वस्तु धर्मे कदा न परसंगी ॥ अ० ६
संग्रहे नहीं आपे नहीं परभणी ।

नवि करे आदरे न पर राखे ।
शुद्ध स्याद्वाद निज भाव
भोगी जिके ।
तेह परभावने केम चाखे । अ० ७॥
ताहरी शुद्धता भास आश्चर्यथी ।
ऊपजे रुचि तेणे तत्व ईहे ॥
तत्वरंगी थयो दोषथी उभग्यो ।
दोष त्यागी ढले तत्व लीहे अ० ८
शुद्ध मार्गे वध्यो साध्य साधन
सध्यो ।
स्वामि प्रतिछंदे सत्ता आराधे ॥
आत्म निष्पत्ति तिहां साधना
नवि टके ।
वस्तु उत्सर्ग आतम समाधे अ० ९

माह्‌री शुद्ध सत्ता तणी पूर्णता ।
तेह्‌नो हेतु प्रभु तुंही साचो ॥
देवचंद्रे स्तव्यो मुनिगणे अनुभव्यो
तत्व भक्ते भविक सकल राच्यो
॥ अ० १० ॥

॥ श्री पद्मपभ जिन स्तवन ॥

(हुं तुज आगल शी कहुं केशरिया
लाल)

श्री पद्मप्रभ जिन गुण निधिरे लाल
जग तारक जगदीशरे वालेसर ॥
जिन उपकार थकी लहेरे लाल ।
भविजन सिद्धि जगीशरे वा० १ ॥

तुज दरिशण मुज वालहोरे लाल
दरिशण शुद्ध पवित्तरे वा. ॥
दरशण शब्द नये करेरे लाल ।
संग्रह एवंभूतरे ॥ वा० तु० २ ॥
बीजे वृक्ष अनंतताे लाल ।
पसरे भूजल योगरे ॥ वा० ॥
तिम मुज आतम संपदारे लाल
प्रगटे प्रभु संयोगरे वा० तु० ३ ॥
जगत जंतु कारज रुचिरे लाल ।
साधे उदये भाणरे ॥ वा. ॥
चिदानंद सुविलासतारे लाल ।
वाधे जिनवर झाणरे ॥ वा० तु० ४
लब्धि सिद्ध मंत्राक्षररे लाल ।

उपजे साधक संगरे ॥ वा० ।
सहज अध्यातम तत्वतारे लाल ।
प्रगटे तत्वी रंगरे ॥ वा० तु० ५ ॥
लोह धातु कांचन हुवेरे लाल ।
पारस फरसन पामीरे ॥ वा० ॥
प्रगटे अध्यातम दशारे लाल ।
व्यक्त गुणी गुण ग्रामरे वा० तु० ६
आतम सिद्धि कारज भणीरे लाल
सहज निर्यामक हेतुरे ॥ वा० ॥
नामादिक जिन राजनारे लाल ।
भवसागर मांहे सेतुरे वा० तु० ७
स्थंभन इंद्रिय योगनोरे लाल ।
रक्त वर्ण गुणरायरे ॥ वा० ॥

देवचंद्र स्तं दे स्तव्योरे लाल ।
आप अवर्ण अकायरे वा० तु० ८ ॥

॥ श्री सुपार्श्व जिन स्तवन ॥

[हो सुंदर तप सरिखो जग कोइ नहीं]

श्री सुपास आनंदमें ।
गुण अनंतनो कंद हो ॥ जिनजी ॥
ज्ञानानंदे पूरणो ।
पवित्र चारित्रानंद हो जि० श्री १
संरक्षण विण नाथ छो ।
द्रव्य विना धनवंत हो ॥ जि० ॥
कर्त्ता पद किरिया विना ॥
संत अजेय अनंत हो जि० श्री २

अगम अगोचर अमर तुं ।
अन्वय ऋद्धि समूह हो ॥ जि० ॥
वर्ण गंध रस फरस विणु ।
निज भोक्ता गुण व्युह हो जिश्री ३
अक्षय दान अचिंतना ।
लाभ अयत्ने भोग हो ॥ जि० ॥
वीर्य शक्ति अप्रयासता ।
शुद्ध स्वगुण उपभोग हो जिश्री४॥
एकांतिक आत्यंतिको ।
सहज अकृत स्वाधीन हो ॥जि०॥
निरूपचरित निर्द्वंद सुख ।
अन्य अहेतुक पीन हो ॥जि० श्री५
एक प्रदेशे ताहरे ।

अव्याबाध समाय हो ॥ जि० ॥

तसु पर्याय अविभागता ।
सर्वाकाश न माय हो जि० श्री ६

एम अनंत गुणनो धणी ।
गुण गुणनो आनन्द हो ॥ जि० ॥

भोग रमण आस्वाद युत ।
प्रभु तुं परमानंद हो जि० श्री ७ ॥

अव्याबाध रुचि थइ ।
साधे अव्याबाध हो जि० ॥

देवचंद्र पद ते लहे ।
परमानंद समाध हो । जि० श्री ८ ।

॥ श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन ॥

(श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी)

श्री चंद्रप्रभ जिन पद् सेवा ।
हेवाये जे हलियाजी ॥
आतमगुण अनुभवथी मळिया !
ते भव भयथी टलियाजी श्री० १

द्रव्य सेव वंदन नमनादिक ।
अर्चन वलि गुण ग्रामोजी ॥
भाव अभेद थावानी इहा ।
परभावे निःकामोजी ॥ श्री० २ ॥

भाव सेव अपवादे नैगम ।
प्रभु गुणने संकल्पेजी ॥
संग्रह सत्ता तुल्या रोपे ।

भेदा भेद विकल्पेजी ॥ श्री० ३ ॥

व्यवहारे बहु मान ज्ञान निज ।

चरणे जिन गुण रमणाजी ॥

प्रभु गुण आलंबी परिणामे ।

ऋजु पद ध्यान स्मरणाजी श्री० ४

शब्दे शुक्ल ध्यानारोहण ।

समभिरूढ गुण दशमेजी ॥

बीय शुक्ल अविकल्प एकत्वे ।

एवंभूत ते अममेजी ॥ श्री० ५ ॥

उत्सर्गे समकित गुण प्रगट्यो ।

नैगम प्रभुता अंशेजी ॥

संग्रह आतम सत्तालंबी ।

मुनि पद भाव प्रशंसेजी श्री० ६ ॥

ऋजु सूत्रे जे श्रेणि पदस्थे ।
आत्म शक्ति प्रकासेजी ॥
यथाख्यात पद शब्द स्वरूपे ।
शुद्ध धर्म उल्लासेजो ॥ श्री० ७ ॥
भाव सयोगी अयोगी शैलेसी ।
अंतिम दुगनय जाणोजी ॥
साधनताए निजगुण व्यक्ति ।
तेह सेवना वखाणोजो ॥ श्री० ८

कारण भाव तेह अपवादे ।
कार्यरूप उत्सर्गेजी ॥
आत्म भाव ते भाव द्रव्य पद ।
बाह्य प्रवृत्ति निःसर्गेजी ॥ श्री० ९
कारण भाव परंपर सेवन ।
प्रगटे कारज भावोजी ॥

कारज सिद्ध कारणता व्यय ।
शुचि परिणामिक भावोजी
॥ श्री० १० ॥

परमगुणी सेवन तन्मयता ।
निश्चय ध्याने ध्यावेजी ॥
शुद्धातम अनुभव आस्वादि ।
देवचंद्र पद पावेजी ॥ श्री० ११ ॥

॥ श्री सुविधिनाथजिन स्तवन ॥

(थारा मेहेला ऊपर मेह झरूखे
बीजली हो लाल)

दीठो सुविधि जिणंद ।
समाधी रसे भर्यो हो लाल म० ॥

भास्यो आत्म स्वरूप ।
अनादिनो वीसर्यों हो लाल अ० ॥
सकल विभाग उपाधी ।
थकी मन ओसर्यों हो लाल थ० ॥
सत्ता साधन मार्ग भणी ।
ए संचर्यों हो लाल ॥ भ० ? ॥
तुम प्रभु जाणंग रीति ।
सर्व जग देखता हो लाल ॥ स० ॥
निज सत्ताये शुद्ध ।
सहुने लेखता हो लाल ॥ स० ॥
पर परिणति अद्वेष ।
पणे उवेखता हो लाल ॥ प० ॥
भोग्यपणे निज शक्ति ।

अनंत गवेखता हो लाल ॥ अ० २ ॥

दानादिक निज भाव ।

हता जे परवशा हो लाल ॥ ह० ॥

ते निज सन्मुख भाव ।

ग्रही लही तुज दशा हो लाल ग्र०

प्रभुनो अद्भुत योग ।

स्वरूप तणी रसा हो लाल स्व० ॥

वासे भासे तास ॥

जास गुण तुझ जिसा हो लाल

॥ जा० ३ ॥

मोहादिकनी घूमि ।

अनादिनी उतरे हो लाल ॥ अ० ॥

अमल अखंड अलिप्त ।

स्वभावज सांभरे हो लाल स्व० ॥

तत्त्व रमण शुचि ध्यान ।

भणी जे आदरें हो लाल ॥ भ० ॥

ते समता रस धाम ।

स्वामी मुद्रा वरे हो लाल स्वा०४॥

प्रभु छो त्रिभुवन नाथ ।

दास हुं ताहरो हो लाल ॥ दा० ॥

करुणानिधि अभिलाष ।

अछे मुज ए खरो हो लाल ॥ अ०॥

आतम वस्तु स्वभाव ।

सदा मुज सांभरा हो लाल स० ॥

भासन वासन एह ।

चरण ध्याने धरो हो लाल च० ५

प्रभु मुद्राने योग ।
प्रभु प्रभुना लखे हो लाल ॥ प्र०
द्रव्यतणे साधर्म्य ।
स्व संपत्ति ओलखे हो लाल स्व० ॥
ओळखतां बहु मान ।
सहित रुचि पण वधे हो लाल स०
रुचि अनुयायी वीर्य ।
चरण धारा सधे हो लाल च० ६ ॥
क्षायोपशमिक गुण सर्व ।
थया तुज गुण रसी हो लाल थ० ॥
सत्ता साधन शक्ति ।
व्यक्तता उल्लसी हो लाल ॥ व्य० ॥
हवे संपूरण सिद्ध ।

तणी शी वार छे हो लाल ॥ त० ॥
देवचन्द्र जिनराज
जगत आधार छे हो लाल ज० ७॥

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन ॥

(आदर जीव क्षमा गुण आदर.)
शीतळ जिन पति प्रभुता प्रभुनो।
मुजथी कहिय न जायजी ॥
अनंतता निर्मलता पूरणता ।
ज्ञान विना न जणायजी शी० १॥
चरम जलधी जल मिणे अंजली ।
गति झिपे अति वायजी ॥
सर्व आकाश उलंघे चरणें ।
पण प्रभुता न गणायजी शी० २ ॥

सर्व द्रव्य प्रदेश अनंता ।
तेहथी गुण पर्यायजी ॥
तास वर्गथी अनंत गणुं प्रभु ।
केवल ज्ञान कहायजी ॥ शी० ३ ॥

केवल दर्शन एम अनंतु ।
ग्रहे सामान्य स्वभावजी ॥
स्वपर अनंतथी चरण अनंतु ।
स्मरण संवर भावजी ॥ शी० ४ ॥

द्रव्य क्षेत्र ने काल भाव गुण ।
राजनीति ए चारजी ॥
त्रास विना जड चेतन प्रभुनी ।
कोइ न लोपे कारजी ॥ शी० ५ ॥

शुद्धाशय स्थिर प्रभु उपयोगे ।

जे समरे तुझ नामजी
अव्याबाध अनंतो पामे।
परम अमृत सुख धामजी शी० ६॥
आणा ईश्वरता निर्भयता।
निर्वांछकता रूपजी ।
भाव स्वाधीन ते अव्यय रीते।
एम अनंत गुण भूपजी ॥ शी० ७॥
अव्याबाध सुख निर्मल ते तो।
करण ज्ञाने न जणायजी
तेहज एहनो जाणंग भोक्ता।
जे तुम समगुण रायजी शी० ८॥
एम अनंत दानादिक निज गुण।
वचनातीत पंडूरजो ॥

वासन भासन भावे दुर्लभ ।
प्राप्ति तो अति दूरजो ॥ शी० ९॥

सकल प्रत्यक्षपणे त्रिभुवन गुरु ।
जाणुं तुज गुण ग्रामजी ॥
बीजुं कांइ न मांगु स्वामी ।
एहिज छे मुज कामजी ॥शी० १०

एम अनंत प्रभुता सरदहता ।
अरचे जे प्रभु रूपजी ॥
देवचंद्र प्रभुता ते पामे ।
परमानंद स्वरूपजी ॥ शी० ११ ॥

॥ श्री श्रेयांस जिन स्तवन ॥

(पांडव पांचे वांदतां मन मोहेरे.)

श्री श्रेयांस प्रभु तणो ।
अति अद्भुत सहजानंदरे ॥
गुण इक विध त्रिक परिणम्यो ।
एम गुण अनंतनो वृंदरे
मुनिचंद जिणंद अमंद दिणंद परे ।
नित्य दीपतो सुखकंदरे ॥
निज ज्ञाने करी ज्ञेयनो ।
ज्ञायक ज्ञाता पद ईशरे ॥
देखे निज दरशण करी ।
निज दृश्य सामान्य जगीशरे
॥ मु० २ ॥

निज रम्ये रमण करो ।
प्रभु चारित्रे रमता रामरे ॥

भोग्य अनंतने भोगवो ।
भोगे तेणे भोक्ता स्वामरे मु० ३ ॥
देय दान नित दीजते
अति दाता प्रभु स्वयमेवरे ।
पात्र तुमे निज शक्तिना ।
ग्राहक व्यापकमय देवरे ॥ मु० ४ ॥
परिणामी कारजतणो ।
कर्त्ता गुण करणे नाथरे ॥
अक्रिय अक्षय स्थितिमयी ।
निकलंक अनंती आथरे ॥ मु० ५ ॥
परिणामी सत्ता तणो ।
आविर्भाव विलास निवासरे
सहज अकृत्रिम अपराश्रयी ।

निर्विकल्पने निःप्रयासरे ॥मु० ६ ॥
प्रभु प्रभुता सभारता ।
गातां करतां गुण ग्रामरे ॥
सेवक साधनता वरे ।
निजसंवर परिणति पामरे मु० ७॥
प्रगट तत्त्वता ध्यावता ।
निज तत्त्वनो ध्याता थायरे ॥
तत्त्व रमण एकाग्रता ।
पूरण तत्त्वे एह समायरे ॥ मु० ८ ॥
प्रभु दीठे मुज सांभरे ।
परमातम पूरणानंदरे ॥
देवचंद्र जिन राजना ।
नित्य वंदो पय अरविंदरे ॥ मु० ९ ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

(पंथड़ो निहालुरे बीजा जिन तणोरे)

पूजना तो कीजेरे बारमा जिनतणीरे
जसु प्रगट्यो पूज्य स्वभाव ॥
परकृत पूजारे जे इच्छे नहींरे ।
साधक कारज दाव ॥ पू० १ ॥
द्रव्यथी पूजारे कारण भावनोरे ।
भाव प्रशस्त ने शुद्ध ॥
परम इष्ट वल्लभ त्रिभुवन धणीरे
वासुपूज्य स्वयंबुद्ध ॥ पू० २ ॥
अतिशय महिमारे अति उप-
गारतारे ।
निर्मल प्रभु गुण राग ॥

सुरमणी सुरघट सुरतरु तुच्छतेरे ।
जिन रागी महा भाग ॥ पू० ३ ॥

दर्शन ज्ञानादिक गुण आत्मनारे ।
प्रभु प्रभुतालय लीन ।

शुद्ध स्वरूपी रूपे तन्मयीरे ।
तसु आस्वादन पीन ॥ पू० ४ ॥

शुद्ध तत्व रसरंगी चेतनारे ।
पामे आत्म स्वभाव ॥
आत्मालंबी निजगुण साधतोरे ।
प्रगटे पूज्य स्वभाव ॥ पू० ५ ॥

आप अकर्त्ता सेवाथी हूवेरे ।
सेवक पूरण सिद्धि ॥
निज धन न दिए पण आश्रित लहेरे

अक्षय अक्षर ऋद्धि ॥ पू० ६ ॥
जिनवर पूजारे ते निज पूजनारे ।
प्रगटे अन्वय शक्ति ॥
परमानंद विलासी अनुभवेरे ।
देवचंद्र पद व्यक्ति ॥ पू० ७ ॥

॥ श्री विमल जिन स्तवन ॥

(दास अरदास सी परे करेजी.)
विमल जिन विमलता ताह्‌रीजी।
अवर बीजे न कहाय ॥
लघु नदी जिम तिम लंघिएजी ।
स्वयंभु रमण न तराय ॥ वि० १ ॥
सयल पुढवी गिरिजल तरुजी ।

कोइ तोले एक हाथ ॥
तेह पण तुज गुण गण भणीजी ।
भाखवा नहीं समरथ ॥ वि० २ ॥
सर्व पुद्गल नभ धरमनाजी ।
तेम अधर्म प्रदेश ॥
तास गुण धर्म पज्जव सहुजी ।
तुज गुण एक तणो लेश वि० ३ ॥
एम निज भाव अनंतनोजी ।
अस्तिता केटली थाय ॥
नास्तिता स्वपर पद अस्तिताजी ।
तुज समकाल समाय ॥ वि० ४ ॥
ताहरा शुद्ध स्वभावनेजी ।
आदरे धरी बहु मान ॥

तेहने तेहिज नीपजेजी ।
ए कोइ अद्भुत तान ॥ वि० ५ ॥
तुम प्रभु तुम तारक विभुजी ।
तुम सम अवर न कोय ॥
तुम दरिशण थकी हुं तर्योजी ।
शुद्ध आलंबन होय ॥ वि० ६ ॥
प्रभु तणी विमलता ओलखीजी ।
जे करे स्थिर मन सेव ॥
देवचंद्र पद ते लहेजी ।
विमल आनंद स्वयमेव ॥ वि० ७॥

॥ अनंतनाथ जिन स्तवन ॥

(दीठी हो प्रभु दीठो जग गुरु तुज.]

मूरति हो प्रभु
मूरति अनंत जिणंद ।
ताहरी हो प्रभु
ताहरी मुज नयणे वसीजी ।
समता हो प्रभु समता रसनो कंद ।
सहेजे हो प्रभु
सहेजे अनुभव रस लसीजी ॥१॥
भव दव हो प्रभु
भव दव तापित जीव ।
तेहने हो प्रभु
तेहने अमृत घन समीजी ॥
मिथ्या विष हो प्रभु
मिथ्या विषनी टेव ।

हरवा हो प्रभु
हरवा जांगुलि मन रमीजी ॥ २ ॥
भाव हो प्रभु
भाव चिंतामणी एह ।
आतम हो प्रभु
आतम संपति आपवाजी ।
एहिज हो प्रभु
एहिज शिव सुख गेह ।
तत्त्व हो प्रभु
तत्त्वालंबन स्थापवाजो ॥ ३ ॥
जाए हो प्रभु जाए आश्रव चाल ।
दीठे हो प्रभु दीठे संवर वधेजी ॥
रत्न हो प्रभु रत्नत्रयी गुण माल ।

अध्यातम हो प्रभु
अध्यातम साधन सधेजी॥ ४ ॥
मीठी हो प्रभु मीठी सुरत तुज ।
दीठो हो प्रभु
दीठो रुचि बहु मानथीजो ॥
तुज गुण हो प्रभु
तुज गुण भासन युक्त ।
सेवे हो प्रभु
सेवे तसु भव भय नथीजी ॥ ५ ॥
नामे हो प्रभु नामे अद्भुत रंग ।
ठवणा हो प्रभु ठवणा दीठे उल्लसेजी
गुण आस्वाद हो प्रभु
गुण आस्वाद अभंग ।

तन्मय हो प्रभु
तन्मयतायें जे धसेजी ॥ ६ ॥
गुण अनंत हो प्रभु
गुण अनंतनो वृंद ।
नाथ हो प्रभु
नाथ अनंतने आदरेजी ॥
देवचंद्र हो प्रभु देवचंद्रने आनंद ।
परम हो प्रभु
परम महोदय ते वरेजी ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

(सफल संसार अवतार ए हूं गणुं)
धर्म जग नाथनो धर्म सुचि गाइये

आपणो आतमा तेह्वो भावियें
जाति जसु एकत्ता तेह् पलटे नहीं।
शुद्ध गुण पज्जवा वस्तु सत्तामयी१
नित्य निरवयव वलि एक अक्रिय
पणे ।
सर्वगत तेह् सामान्य भावे भणे ॥
तेह्थी इतर सावयव विशेषता ।
व्यक्ति भेदे पडे जेहनी भेदता ॥२॥
एकता पिंडने नित्य अविनाशता ।
अस्ति निज ऋद्धिथी कार्यगत भेदता।
भाव श्रुत गम्य अभिलाप्य
अनंतता ।
भव्य पर्यायनी जे परावर्त्तिता ॥३॥

क्षेत्र गुण भाव अविभाग अनेकता
नाश उत्पाद अनित्य पर नास्तिता
क्षेत्र व्याप्यत्व अभेद अव्यक्तता।
वस्तु ते रूपथी नियत अभव्यता ४
धर्म प्रागभावता सकल गुण शुद्धता
भोग्यता कर्तृता रमण परिणामता
शुद्ध स्वप्रदेशता तत्त्व चैतन्यता।
व्याप्य व्यापक तथा ग्राह्य
ग्राहकगता ॥ ५ ॥
संग परिहारथी स्वामि निज
पद लह्यु।
शुद्ध आत्मिक आनंद पद संग्रह्यु ॥
जदपि परभावथी हुं भवोदधि

वस्यो ।
परतणो संग संसारताये
ग्रस्यो ॥ ६ ॥
तहवि सत्ता गुणे जीव ए निग्मलो
अन्य संश्लेष जिम फिटक
नवि सांमलो
जे परोपाधिथी दुष्ट परिणति ग्रही
भाव तादात्म्यमां माहरु ते नहीं ७
तिणे परमात्म प्रभु भक्ति रंगी थइ
शुद्ध कारणरसे तत्व परिणतिमयी
आत्म ग्राहक थये तजे पर ग्रहणता
तत्त्वभोगी थये टले परभोग्यता ८
शुद्ध निःप्रयास निजभाव

भोगी यदा।
आत्मक्षेत्रे नहीं अन्य रक्षण तदा॥
एक असहाय निःसंग निरद्वंदता॥
शक्ति उत्सर्गनी होय सहु
व्यक्तता. ९
तेणे मुज आतमा तुजथको नीपजे
माहरी संपदा सकल मुज संपजे।
तेणे मन मंदिरे धर्म प्रभु ध्याइये॥
परम देवचंद्र निज सिद्ध सुख
पाइये॥ १०॥

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन॥

आंखडीये में आज शेत्रुंजो दीठोरे.

जगत दिवाकर जगत कृपानिधि ।
वाहालो मारा समवसरणमां बैठारे
चउमुख चउविह धर्म प्रकाशे ।
ते मैं नयणे दीठारे ।
भविक जन हरखोरे ।
निरखी शांति जिणंद ॥ भ० ॥
उमसम रसनो कंद नही इण
सरखोरे ॥ १ ॥
प्रातिहार्य अतिशय शोभा ।
वाला म्हारा तेतो कहीय न जावेरे
घूक बालकथो रविकरभरनुं ।
वर्णन केणीपरे थावेरे भ० ॥ २ ॥
वाणी गुण पांत्रीश अनोपम ।

वा० अविसंवाद स्वरूपेरे ॥
भव दुःख वारण शिव सुख कारण
शुधो धम प्ररूपेरे ॥ भ० ३ ॥
दक्षिण पश्चिम उत्तर दिस मुख ।
वा० ठवणा जिन उपगारीरे ॥
तसु आलंबन लहिय अनेक ।
तिहां थया समकित धारीरे भ० ४
षट् नय कारज रूपे ठवणा ।
वा० सग नग कारण ठाणीरे ॥
निमित्त समान थापना जिनजी ।
ए आगमनी वाणीरे ॥ भ० ५ ॥
साधक तीन निक्षेपा मुख्य ।
वा० जे विणु भाव न लहियेरे ॥

उपगारी दुग भाष्ये भाख्या ।
भाव वंदकनो ग्रहियेरे भ० ॥ ६ ।
ठवणा समोसरणे जिनसेति ।
वा० जो अभेदता वाधीरे ॥
ए आत्मना स्वस्वभाव गुण ।
व्यक्त योग्यता साधीरे ॥ भ० ७ ।
भलुं थयुं मैं प्रभु गुणगाया ।
वा० रसनानो फल लीधोरे ॥
देवचंद्र कहे माहारा मननो ।
सकल मनोरथ सीधोरे ॥ भ० ८ ।

॥ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन ॥

(चरम जिणेशरुं—ए देशी.)

समवसरण वेसी करीरे ।
बारह परषदा मांहे ॥
वस्तु स्वरूप प्रकाशतारे ।
करुणाकर जगनाहोरे
॥ कुंथु जिनेसरु १ ॥
निरमल तुज मुख वाणी रे ।
जे श्रवणे सुणे ॥
तेहिज गुण मणी खाणीरे ।
कुंथु जिनेसरु २ ॥
गुण पर्याय अनंततारे ।
वलिय स्वभाव अगाह ॥
नयगम भंग निक्षेपनारे ।
हेया देय प्रवाहोरे ॥ कुंथु० ३ ॥

कुंथुनाथ प्रभु देशनारे ।
साधन साधक सिद्ध ॥
गौण मुख्यता वचनमांरे ।
ज्ञान ते सकल समृद्धोरे ॥ कुंथु ४॥
वस्तु अनंत स्वभाव छे रे ।
अनंत कथक तसु नाम ॥
ग्राहक अवसर बोधथीरे ।
केहवे अर्पित कामोरे ॥ कुंथु० ५ ॥
शेष अनर्पित धर्मनेरे ।
सापेक्ष श्रद्धा बोध ॥
उभय रहित भासन होवेरे ।
प्रगटे केवल बोधरे ॥ कुंथु० ६ ॥
छति परिणति गुण वर्तनारे ।

भासन भोग आणंद ॥
समकाले प्रभु ताहरेरे ।
रम्य रमण गुण वृंदोगे कुंथु० ७ ॥
निज भावे सो अस्तितारे ।
परनास्तित्व स्वभावरे ॥
अस्तिपणे ते नास्तितारे ।
सीय ते उभय स्वभावोरे कुंथु० ८॥
अस्ति स्वभाव जे आपणोरे ।
रुचि वैराग्य समेत ॥
प्रभु सन्मुख वंदन करीरे ।
मांगीस आत्म हेतोरे॥ कुंथु० ९ ॥
अस्ति स्वभाव रुचि थयीरे ।
ध्यातो अस्ति स्वभाव ॥

देवचंद्र पद ते लहेरे ।
परमानंद जमावोरे ॥ कुंथु० १० ॥

॥ श्री अरनाथ जिन स्तवन ॥

रामचंद्रके बाग चांपो मोरी रह्योरी

प्रणमो श्री अरनाथ ।
शिवपुर साथ खरोरी ॥
त्रिभुवन जन आधार ।
भव निस्तार करोरी ॥ १ ॥
करता कारण योग ।
कारज सिद्धि लहेरी ॥
कारण चार अनूप ।
कार्यार्थी तेह ग्रहेरी ॥ २ ॥

जे कारण ते कार्य ।
थाये पूर्ण पदेरी ॥
उपादान ते हेतु ।
माटी घट ते वदेरी ३
उपादानथी भिन्न ।
जे विणु कार्य न थाय ।
न हुए कारज रूप ।
कर्त्ताने व्यवसाये ॥ ४ ॥
कारण तेह निमित्त ।
चक्रादिक घटभावे ॥
कार्य तथा समवाय ।
कारण नियतने दावे ॥ ५ ॥
वस्तु अभेद स्वरूप ।

कार्यपणुं न ग्रहेरी ॥
ते असाधारण हेतु ।
कुंभे थास लहेरी ॥ ६ ॥
जेहनो नवि व्यापार ।
भिन्न नियत बहु भावी ॥
भूमि काल आकाश ।
घट कारण सद्भावी ॥ ७ ॥
एह अपेक्षा हेतु ।
आगम मांहे कह्योरी ॥
कारण पद उत्पन्न ।
कार्य थये न लह्योरी ॥ ८ ॥
कर्त्ता आतम द्रव्य ।
कार्य सिद्धिपणोरी ॥

निज सत्तागत धर्म ।
ते उपादान गणोरी ॥ ९ ॥
योग समाधि विधान ।
असाधारण तेह वदेरी ॥
विधि आचरणा भक्ति ।
जिणे निज कार्य सधेरी ॥१०॥
नरगति पढम संघयण ।
तेह अपेक्षा जाणो ॥
निमित्ताश्रित उपादान ।
तेहने लेखे आणो ॥ ११ ॥
निमित्त हेतु जिनराज ।
समता अमृत खाणी ॥
प्रभु अवलंबन सिद्धि ।

नियमा एह वखाणी ॥ १२ ॥
पुष्ट हेतु अरनाथ ।
तेहना गुणथी हलीयें ॥
रीझ भक्ति बहु मान ।
भोगध्यानथी मलीयें ॥ १३ ॥
मोटाने उत्संग ।
बेठाने सी चिंता ॥
तिम प्रभु चरण पसाय ।
सेवक थया निचिंता ॥ १४ ॥
अरप्रभु प्रभुता रंग ।
अंतर शक्तिविकासी ॥
देवचंद्रने आणंद ।
अक्षय भोग विलासी ॥ १५ ॥

॥ श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन ॥

(देखी कामीनी दोयके कामे व्याप्योरे)

मल्लिनाथ जगनाथ ।
चरण युग ध्याईयेंरे ॥ च० ॥
शुद्धातम प्रागभाव ।
परम पद पाईयेंरे ॥ प० ॥
साधक कारक षट्क ।
करे गुण साधनारे ॥ क० ॥
तेहिज शुद्ध स्वरूप ।
थाये निराबाधनारे ॥ था० १॥
कर्त्ता आतम द्रव्य ।
कार्य निज सिद्धतारे ॥ का० ॥
उपादान परिणाम ।

प्रयुक्त ते कारणतारे ॥ प्र० ॥
आतमसंपद् दान ।
तेह संप्रदानतारे ॥ ते० ॥
दाता पात्रने देय ।
त्रिभाव अभेदतारे ॥ त्रि० २ ॥
स्वपर बिवेचन करण ।
तेह अपादानथीरे ॥ ते० ॥
सकल पर्याय आधार ।
संबंध आस्थानथीरे ॥ सं० ॥
बाधक कारक भाव ।
अनादि निवारवारे ॥ अ० ॥
साधकता अवलंबी ।
तेह समारवारे ॥ ते० ३ ॥

शुद्धपणे पर्याय ।
प्रवर्तन कार्यमेंरे ॥ प्र० ॥
कर्तादिक परिणाम ।
ते आतम धर्ममेंरे ॥ ते० ॥
चेतन चेतन भाव ।
करे समवेतमेंरे ॥ क० ॥
सादि अनंतो काळ ।
रहे निज खेतमेंरे ॥ र० ४ ॥
पर कर्तृत्व स्वभाव ।
करे तां लगे कररे ॥ क० ॥
शुद्ध कार्य रुचि भास ।
थये नवि आदरेरे ॥ थ० ॥
शुद्धातम निज कार्य ।

रुचे कारक फिरेरे ॥ रु० ॥
तेहिज मूल स्वभाव ॥
ग्रहे निज पद बरेरे ॥ ग्र० ८॥
कारण कार्य रूप ।
अछे कारक दशारे ॥ अ० ॥
वस्तु प्रगट पर्याय ।
एह मनमें वस्यारे ॥ ए० ॥
पण शुद्ध स्वरूप ध्यान ।
ते चेतनताग्रहेरे ॥ ते० ॥
तव निज साधक भाव ।
सकल कारक लहेरे ॥ स० ६ ।
माहारुं पूर्णानंद ।
प्रगट करवा भणीरे ॥ प्र० ॥

पुष्टालंबन रूप ।

सेव प्रभुजी तणीरे ॥से० ॥

देवचंद्र जिनचंद्र ।

भक्ति मनमें धरोरे । भ० ॥

अव्याबाध अनंत ।

अक्षय पद आदरोरे ॥ अ० ७ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

(ओलंगडी २ सुहेली हो श्री श्रेयांसनीरे)

ओलंगडी ओलंगडी तोकीजे

श्री मुनिसुव्रत स्वामीनीरे

जेहथी निज पद सिद्धि ॥

केवल केवल ज्ञानादिक गुण

लह्लेरे ।

लहिए सहेज समृद्धि ॥ ओ० १ ॥

उपादान उपादान निज

परिणति वस्तुमीरे ।

पण कारण निमित्त आधीन ॥

पुष्ट अपुष्ट दुविध ते उपदिश्योरे ।

ग्राहक विधि आधीन ॥ ओ० २ ॥

साध्य साध्य धर्म जे मांहे होवेरे ।

ते निमित्त अति पुष्ट ॥

पुष्पमांहे तिलवासक वासनारे ।

नथि प्रध्वंशक दुष्ट ॥ ओ० ३ ॥

दंड दंड निमित्त अपुष्ट घडा

तणोरे ।

य घटता तसु मांह ॥
साधक साधक प्रध्वंशकता अछेरे।
तिणे नहीं नियत प्रवाह ॥ ओ० ४॥
षट्कारक षट्कारक ते कारण
कार्यनुरे ।
जे कारण स्वाधीन ॥
ते कर्त्ता ते कर्त्ता सहु कारक ते वसुरे
कर्म ते कारण पीन ॥ ओ० ५ ॥
कार्य कार्य संकल्पे कारक दशारे ।
छति सत्ता सद्भाव ॥
अथवा तुल्य धर्मने जोयवेरे ।
साध्यारोपण दाव ॥ ओ० ६ ॥
अतिशय अतिशय कारण

कारक करणतारे ।

निमित्त अने उपादान ॥

संप्रदान संप्रदान कारण

पद भवनथी रे ।

कारण व्यय अपादान ॥ ओ० ७॥

भवन भवन व्यय विणु

कारज नवि होवेरे ।

जिम दृषदे न घटत्व ॥

शुद्धाधार शुद्धाधार

सुगुणनो द्रव्यछेरे ।

सत्ताधार सुतत्व ॥ ओ० ८ ॥

आतम आतम कर्ता कार्य सिद्धतारे

तसु साधन जिनराज ॥

प्रभु दिठे प्रभु दिठे कारज
रुचि ऊपजेरे
प्रगटे आत्म समाज ॥ ओ० ९ ॥
वंदन वंदन नमन सेवन
वली पूजनारे ॥
स्मरण स्तवन वली ध्यान ॥
देवचंद्र देवचंद्र कीजे जगदीशनुंरे
प्रगटे पूर्ण निधान ॥ ओ० १० ॥

॥ श्री नमिनाथ जिन स्तवन ॥

(पीछोलारी पाल उभा दोय राजवीरे.)
श्री नमि जिनवर शेव ।
घनाघन उनम्योरे ॥ घ० ॥

दिठां मिथ्यारोर ।

भविक चित्तथी गम्योरे ॥ भ० ॥

शुचि आचारणा रीतिते ।

अभ्र बधे बडारे अ० ॥

आतम परिणति शुद्ध ।

ते बीज झबुकडारे ॥ ते० १ ॥

बाजे वायु सुवायु ।

ते पावन भावनारे ॥ ते० ॥

इंद्र धनुष्य त्रिकयोग ।

ते भक्ति एक मनारे ॥ ते० ॥

निर्मल प्रभु स्तव घोष-

ध्वनि घन गर्जनारे ॥ ध्व० ॥

तृष्णा ग्रीषम काल ।

तापनी तर्जनारे ॥ ता० २ ॥

शुभ लेश्यानी आलि ।

ते बग पंक्ति बनीरे ॥ ते० ॥

श्रेणी सरोवर हंस ।

वसे शुचि गुण मुनिरे ॥ व० ॥

चउगति मारग बंध ।

भविक निज घर रह्यारे ॥ भ० ॥

चेतन समता संग ।

रंगमें उमह्यारे ॥ रं० ३ ॥

सम्यग् दृष्टि मोर ।

तिहां हरखे घणुंरे ॥ ति० ॥

देखी अद्भुत रूप ।

परम जिनवर तणुंरे ॥ प० ॥

प्रभु गुणनो उपदेश ।
ते जलधारा वहीरे ॥ ते० ॥
धर्म रुचि भूमि ।
मांहे निश्चल रहीरे ॥ मां० ४ ॥
चातक श्रमण समूह ।
करे तब पारणोरे ॥ क० ॥
अनुभव रस आस्वाद ।
सकळ दुःख वारणोरे ॥स० ॥
अशुभाचार निवारण ।
तृण अंकूरतारे ॥ तृ० ॥
विरतीतणा परिणाम ।
ते बीजनी पूरतारे ॥ ते० ५ ॥
पंच महाव्रत धान्य ।

तणां कर्षण वध्यांरे ॥ त० ॥
साध्य भाव निज स्थापी ।
साधनतायें सध्यारे ॥ सा० ॥
क्षायिक दरिसण ज्ञान ।
चरण गुण उपनारे ॥ च० ॥
आदिक बहु गुण सस्य ।
आतम घर नीपनारे ॥आ० ६ ॥
प्रभु दरिसण महामेह ।
तणे परवेशमेरे ॥ त० ॥
परमानंद सुभिक्ष ।
थयामुज देशमेरे ॥ थ० ॥
देवचंद्र जिनचंद्र ।
तणो अनुभव करोरे ॥ त० ॥

सादि अनंतो काल ।
आतम सुख अनुसरोरे ॥ आ० ७

॥ श्री नेमीनाथ जिन स्तवन ॥
(पद्म प्रभ जिन जइ अलगा वस्या.)
नेमि जिनेश्वर निज कारज कर्यो ।
छांड्यो सर्व विभावोजी ॥
आतम शक्ति सकल प्रगट करी ।
आस्वाद्यो निज भावोजी ॥ने० १ ॥
राजुल नारीरे सारी मति धरी ।
अवलंब्या अरिहंतोजी ॥
उत्तम संगेरे उत्तमता वधे ।
सधे आनंद अनंतोजी ॥ ने० २ ॥

धर्म अधर्म आकाश अचेतना ।
ते विजाती अग्राह्योजी ॥
पुद्गल ग्रहवेरे कर्म कलंकता ।
वाधे बाधक बाह्योजी ॥ ने० ३ ॥
रागी संगेरे राग दशा वधे ।
थाए तिणे संसारोजी ॥
निरागीथीरे रागनुं जोडवुं ।
लहिए भवनो पारोजी ॥ ने० ४ ॥
अप्रशस्ततारे टाली प्रशस्तता ।
करतां आश्रव नाशोजी ॥
संवर वाधेरे साधे निर्जरा ।
आतम भाव प्रकाशोजी ॥ ने० ५ ॥
नेमि प्रभु ध्यानेरे एकत्वता ।

निज तत्वे एक तानोजी ॥
शुक्ल ध्यानेरे साधि सुसिद्धिता ।
लहिये मुक्ति निदानोजी ॥ ने० ६ ॥
अगम अरूपीरे अलख अगोचरू ।
परमातम परमीशोजी ॥
देवचंद्र जिनवरनी सेवना ।
करतां वाधे जगोशोजी ., ने० ७ ॥

॥ पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(कडखानी-देशी.)

सहज गुण आगरो
स्वामी सुख सागरो ॥
ज्ञान वैरागरो प्रभु सवायो ॥

शुद्धता एकता तीक्षणता भावथी ।
मोह रिपु जीति
जय पडह वायो ॥ १ ॥
वस्तु निजभाव अविभास
निकलंकता ।
परिणति वृत्तिता करी अभेदे ॥
भाव तादात्म्यता शक्ति उल्लासथी
संतती योगने तुं उच्छेदे ॥ २ ॥
दोष गुण वस्तुनी लखीय यथार्थता
लही उदासीनता अपरभावे ॥
ध्वंस तज्जन्यता भाव कर्त्तापणुं ।
परम प्रभु तुं रम्यो
निज स्वभावे ॥ ३ ॥

शुभ अशुभ भाव ।

अविभास तहकोकता ।

शुभ अशुभ भाव ।

तिहां प्रभु न कीधुं ॥

शुद्ध परिणामता वीर्य कर्त्ता थइ ।

परम अक्रियता अमृत पीधुं ॥ ४ ॥

शुद्धता प्रभु तणी आत्म भावे रमे।

परम परमात्मता तास थाए ॥

मिश्र भावे अछे त्रिगुणनी भिन्नता।

त्रिगुण एकत्व तुज चरण आए ॥५

उपशम रस भरी सर्व जन शंकरी

मूर्ति जिनराजनी आज भेटी ॥

कारणे कार्य निष्पत्ति श्रद्धान छे ।

तेणे भव भ्रमणनी भीड मेटी ॥६॥
नगर खंभायते पार्श्व प्रभु दरशने ।
विकसते हर्ष उत्साह वाध्यो ॥
हेतु एकत्वता रमण परिणामथी ।
सिद्धि साधकपणो आज साध्यो ।
आज कृतपुन्य धन्य ।
दीह माहरो थयो ॥
आज नर जन्म में सफल भाव्यो ।
देवचंद्र स्वामि त्रेविशमो वंदियो ॥
भक्तिभर चित्त तुज ।
गुण रमाव्यो ॥ ८ ॥

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

(कडखानी-देशी)

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी
जगतमां एटलुं सुजश लीजे ॥
दास अवगण भर्यों जाणी
पोता तणो ।
दयानिधि दीन पर दया कीजे ॥१॥
राग द्वेषे भर्यों मोह वैरी नड्यो ।
लोकनी रीतमां घणुंए रातो ॥
क्रोध वश धमधम्यो
शुद्ध गुण नवि रम्यो ।
भम्यो भवमाहे हुं
विषय मातो ॥ २ ॥
आदर्यों आचरण लोक उपचारथी

शास्त्र अभ्याश पण कोइ कोधो ॥
शुद्ध श्रद्धान वली आत्म
अवलंब विनु ।
तेहवो कार्य तेणे को न सीधो॥ ३ ॥
स्वामि दर्शन समो ।
निमित्त लही निर्मलो ।
जो उपादान ए शुचि न थाशे ॥
दोष को वस्तुनो अहवा
उद्यम तणो ।
स्वामि सेवा सही निकट लासे॥४॥
स्वामि गुण ओलखी ।
स्वामिने जे भजे ।
दर्शन शुद्धता तेह पामे ॥

ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी
कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ ५
जगत वत्सल महावीर ।
    जिनवर सुणी ।
चित प्रभु चरणने शरण वास्यो ॥
तारजो बापजी बिरुद निज राखवा
दासनी सेवना रखे जोशो ॥ ६ ।
विनती मानजो शक्ति ए आपजो
भाव स्याद्वादना शुद्ध भासे ॥
साधि साधक दशा ।
    सिद्धता अनुभवे ।
देवचंद्र विमल पभुता प्रकाशे ॥ ७

॥ कलशरूप पचीशमुं स्तवन ॥

चोविशो जिन गुण गाईये ।

ध्याइये तत्त्व स्वरूपोजी ॥

परमानंद पद पाईये ।

अक्षय ज्ञान अनूपोजी ॥ चो० १॥

चउदहसे बावन भला ।

गणधर गुण भंडारोजी ॥

समतामयी साहु साहुणी ।

सावय सावयी सारोजी ॥चो० २॥

वर्द्धमान जिनवर तणो ।

शासन अति सुखकारोजी ॥

चोविह संघ विराजतो ।

दुःषम काल आधारोजी ॥ चो० ३॥

जिन सेवनथी ज्ञानता ।
लहे हिताहित बोधोजी ॥
अहितत्यागहित आदरे
संयम तपनी शोधोजी ॥ चो० ४ ॥
अभिनव कर्म अग्रहणता ।
जीरण कर्म अभावोजी ॥
निःकरमीने अबाधता ।
अवेदन अनाकुल भावोजी ।चो०५।
भाव रोगना विगमथी ।
अचल अक्षय निराबाधोजी ॥
पूर्णानंद दशालही ।
विलसे सिद्ध समाधोजी ॥ चो० ६ ॥
श्रीजिनचंद्रनी सेवना ।
प्रगटे पुन्य प्रधानोजी ॥

सुमति सागर अति उल्लसे ।
साधु रंग प्रभु ध्यानोजी ॥ चो० ७॥
सुविहित खरतर गच्छवरू ।
राजसागर उवझ्झायोजी ॥
ज्ञान धर्म पाठक तणो ।
शिष्य सुजस सुखदायोजो ॥चो०८
दीपचंद्र पाठक तणो ।
शिष्य स्तवे जिनराजोजो ॥
देवचंद्र पद सेवतां ।
पूर्णानंद समाजोजी ॥ चो० ९ ॥



ॐ अर्हं नमः

महोपाध्याय श्रीमद् देवचंद्र

महाराज अने तत्कृतपुस्तको

ज्ञानदर्शनचारित्र-

व्यक्तरूपाय योगिने

श्रीमते देवचन्द्राय,

संयताय नमोनमः ॥ १ ॥

द्रव्यानुयोगगीतार्थो,

व्रताचारप्रपालकः

देवचन्द्रसमः साधु,

रर्वाचीनो न दृश्यते. ॥ ४ ॥

वाचकस्य महारागी,
सर्वजनोपकारकः,
संमति यस्य सद्ग्रन्थै,
स्तत्त्वबोधः प्रजायते ॥ ५ ॥
आत्मोद्गारामृतं यस्य,
स्तवनेषु प्रदृश्यते
त्रिविधतापतप्तानां,–
पूर्णशान्तिप्रदायकम् ॥ ६ ॥
आनन्दघनगीतार्थ–
पदस्तवनपूजकः
गच्छे खरतरे तस्य
समःकोऽपि न योगिराट् ॥ ७॥
आत्मशमामृतस्वादी,

शास्त्रोद्यानविहारवान्
यत्कृतशास्त्रपाथोधौ,
स्नानं कुर्वन्ति सज्जनाः ॥ ८ ॥
सिद्धान्तपारदृश्वा यो,
गुणानुरागिशेखरः
माध्यस्थ्यं यस्य सच्चिते,
तस्मै नित्यं नमोनमः ॥ ९ ॥
गुर्जरोर्व्यां च सौराष्ट्रे,
मेदपाटे च मालवे,
लाटदेशे च पञ्जाबे,
मरुदेशे स्वपादतः ॥ १० ॥
विहाराश्च कृता नेके,
लोकानां बोधहेतवे

ज्ञानिने देवचन्द्राय,

पूर्णप्रेम्णा नमोनमः ॥ ११ ॥

संभूत अन्तरात्मा य,

आत्मानुभववेदकः

अप्रमत्तदशायोगी,

जिनेन्द्राणां प्रसेवकः ॥ १२ ॥

श्रुतागमप्रलीनाय,

भक्ताय ब्रह्मरागिणे

चिदानन्दस्वरूपाय,

सर्वसंघस्य रागिणे ॥ १३ ॥

ध्यानसमाधिरक्ताय,

विश्ववन्द्याय साधवे

श्रीमते देवचन्द्राय,

पूर्णप्रीत्या नमोनमः ॥ १४ ॥

जैनसंघस्य सेवार्थं,

सर्वस्वार्पणकारिणे

श्रीमते देवचन्द्राय

शुद्धात्मने नमोनमः ॥ १५ ॥

भारतजैनसंघे यः,

प्रादुर्भूतो महामुनिः

मोहतमोविनाशेन,

देवचन्द्रो हि भास्करः ॥१६॥

शीतलः सर्वलोकाना-

मान्तरशान्तिकारकः

क्षमा पृथ्वीसमा यस्य,

गांभीर्यं सागरोपमम् ॥ १७ ॥

धैर्यं मेरुसमं यस्य,
गङ्गावन्निर्मलं मनः
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय,
पूर्णप्रीत्या नमोनमः ॥ १८ ॥
कायोधर्ममयो यस्य,
वचश्च विश्वपावकम्
मन आत्मनि संलग्न-
मात्मा लीनः प्रभौ सदा ॥१९॥
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय,
त्यागिने धर्मरागिणे
नमः श्रीविश्वपूज्याय,
विश्वकल्याणकारिणे ॥ २० ॥
भावमेघस्वरूपाय

विश्वोपग्रहकारिणे
नमः श्रीदेवचन्द्राय
सिद्धांतपारगामिने ॥ २१ ॥
सर्वगच्छेषु माध्यस्थ्यं,
यस्य सत्यं प्रतिष्ठितम्
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय,
पूर्णप्रीत्या नमोनमः ॥ २२ ॥
स्वपरगच्छमाध्यस्थ्यं,
यस्य ज्ञानेन शोभते
सर्व गच्छसम ! श्रीमद् !
देवचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥ २३॥
तपागच्छीयसाधुभिः
सार्धं मैत्रो प्रवर्तकः
आदर्शो देवचन्द्रोऽभूत्

सर्वसाधुशिरोमणिः ॥ २४ ।

देवचन्द्रकृतग्रन्थान्,

स्तुवेऽहं भक्तिभावतः

अमृतसागरा यत्र,

विद्यन्ते सुखकारकाः ॥ २५ ॥

गुणानुरागयोगेन,

देवचन्द्रमहामुनेः

स्तुतिःकृता तपागच्छे,

बुद्धिसागरसूरिणा ॥ २६ ॥

गुणिनां गुणरागेण.

व्यक्ता भवन्ति सद्गुणाः

दोषास्त्याज्या गुणा ग्राह्या

भाषते बुद्धिसागरः ॥ २७ ॥

ले. बुद्धिसागरसूरिः

पं	अशुद्ध	शुद्ध	पत्र
८	श्रीसभत्र.	श्रीसंभव	८
११	दोठो	दीठो	१६
१४	सुरितिर	सुरतिरि	,,
२	तोक्षणरे	तीक्ष्णरे	२२
३	उ-सूत्र	उत्सूत्र	३०
३	राख्	राखु	३८
१०	क्षानने	ज्ञानने	,,
८	नवीमानुं	नविमानुं	४०
८	करुणासागर	करुण रससागर	४८.
४	सुगतिमति	सुगतमति	४८
११	कोजें	कीजे	४८
१२	नेभिनाथ	नेमिनाथ	५७
८	॥ ५ ॥	॥ ४ ॥	५९
१०	काप्रमाणे	काल प्रमाणे	,,
१	आ·म	आत्म	६०

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पत्र
३	लेश्पासंगे	लेश्यासंगे	६३
८	असखित	असंखित	,,
१	०	रे	६९
६	हे	है	७१
८	भंडरोसें	भंडारोसें	,,
९	हे	है	,,

देवचंद्र चोवीसी

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पत्र
१	उपनोरे	उपनोरे	४
४	जिश्री	जि० श्री०	२१
८	वखाणोजो	वखाणोजी	२५
८	जिश्री	जि० श्री०	२१
३	विभाग	विभाव	२७
११	सांभरी	सांभरो	२९
६	प्रभुनो	प्रभुनी	३१
६	निवच्छि०	निर्वाञ्छक.	३२

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पत्र
६	०	म १ ॥	३५
२	ममारता	संभारतां	३७
४	निगमलो	निरमलो	४९
६	तुजथको	तुजथकी	५०
३	धम	धर्म	५२
४	अस्तितरे	अस्तितारे	५६
१३	बातु	वस्तु	५८
९	शुद्ब	शुद्ध	६२
७	अनतो	अनंतो	६४
१२	माहारु	माहरु	६५
१	०ब	नबि	६८
२	कोयता	कीकता	७९

हमारी ओरसे प्रकाशित

ज्ञानबिन्दु.

मीः—

श्री हरिसागर जैन पुस्तकालय

लोहावट (मारवाड)

मीलनेका पत्ता.



१ श्रीहरिसागर जैन पुस्तकालय.

ठि. जायावास,

लोहावट—मारवाड

---

२ शेठ रूपचंन्दजी रीखबदासजी

गोलछा

बीकानेर-राजपुताना

---

३ खरतरगच्छ जैन धर्मशाला.

झवेरीवाडा, कोठारी पोळ

अमदावाद.